राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 20.00 रुपए

भोकालबना ककाल

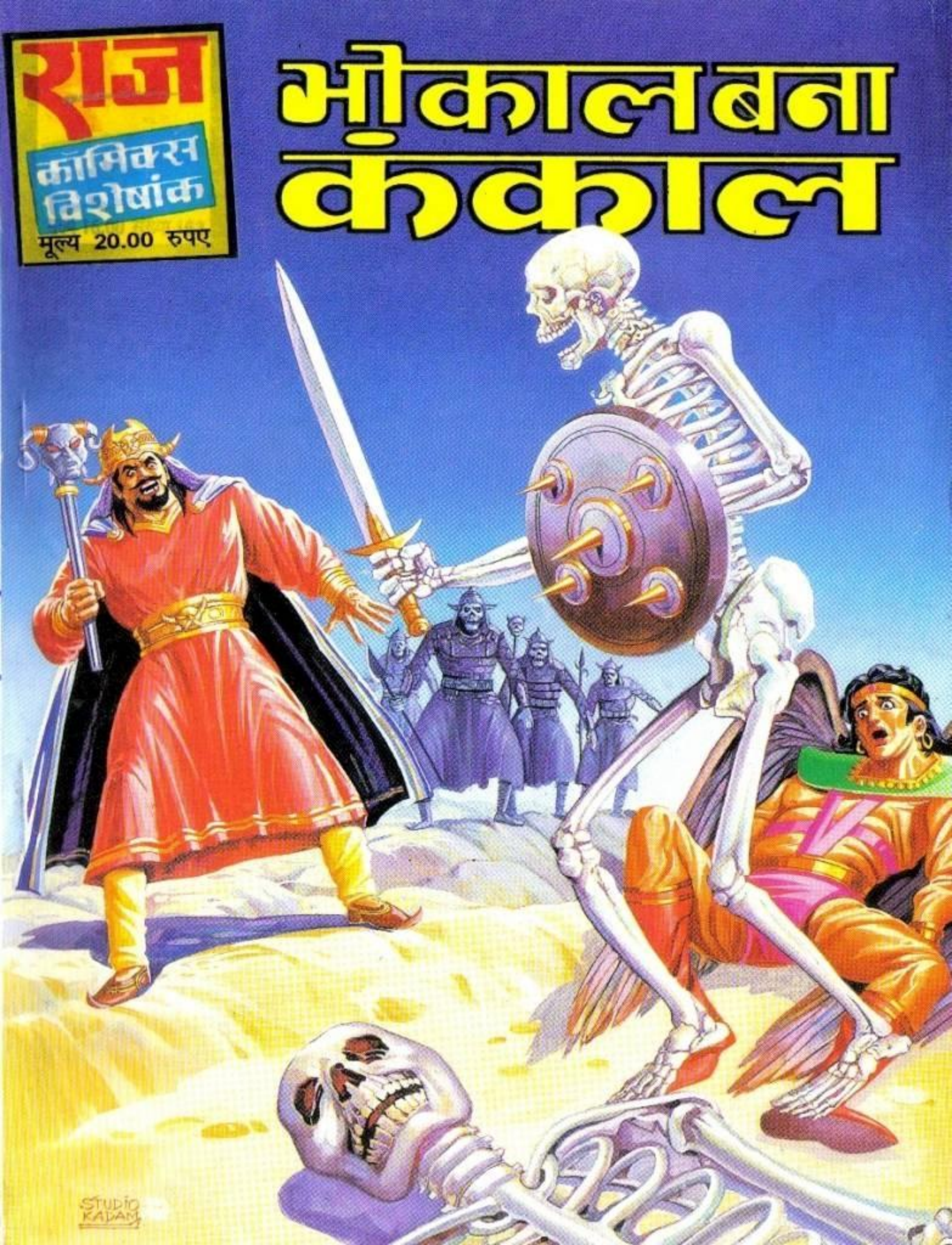

भोकाल बना कंकाल

लेखक:- संजय गुप्ता • सम्पादन:- मनीष गुप्ता • चित्रांकन:- कदम स्टुडिओ

© RAJA POCKET BOOKS

पहली बार ऐसा हुआ है कि मैं अपनी सारी विद्या, सारे ज्ञान का उपयोग करने के बाद भी उस संकट के विषय में नहीं जान पाया हूं परन्तु यह पक्का है कि पूरे विश्व पर एक ऐसा संकट आने वाला है जो सबसे पहले मेरे परिवार को अपना निशाना बनायेगा। ओह!
बोलते-बोलते पुरोहित श्रीमाली चौंक उठे--
अचानक उनके चेहरे पर आतंक और स्वर में भय भरता चला गया--
वो... वो संकट यहीं आ पहुंचा है महारानी!...
... उसका लक्ष्य निश्चय ही मैं हूं।...
मुझे बचाईये महारानी!
सैनिको!
महारानी के आदेश के साथ ही--
राज दरबार में उपस्थित सैनिकों ने पुरोहित श्रीमाली को सुरक्षा घेरे में ले लिया--

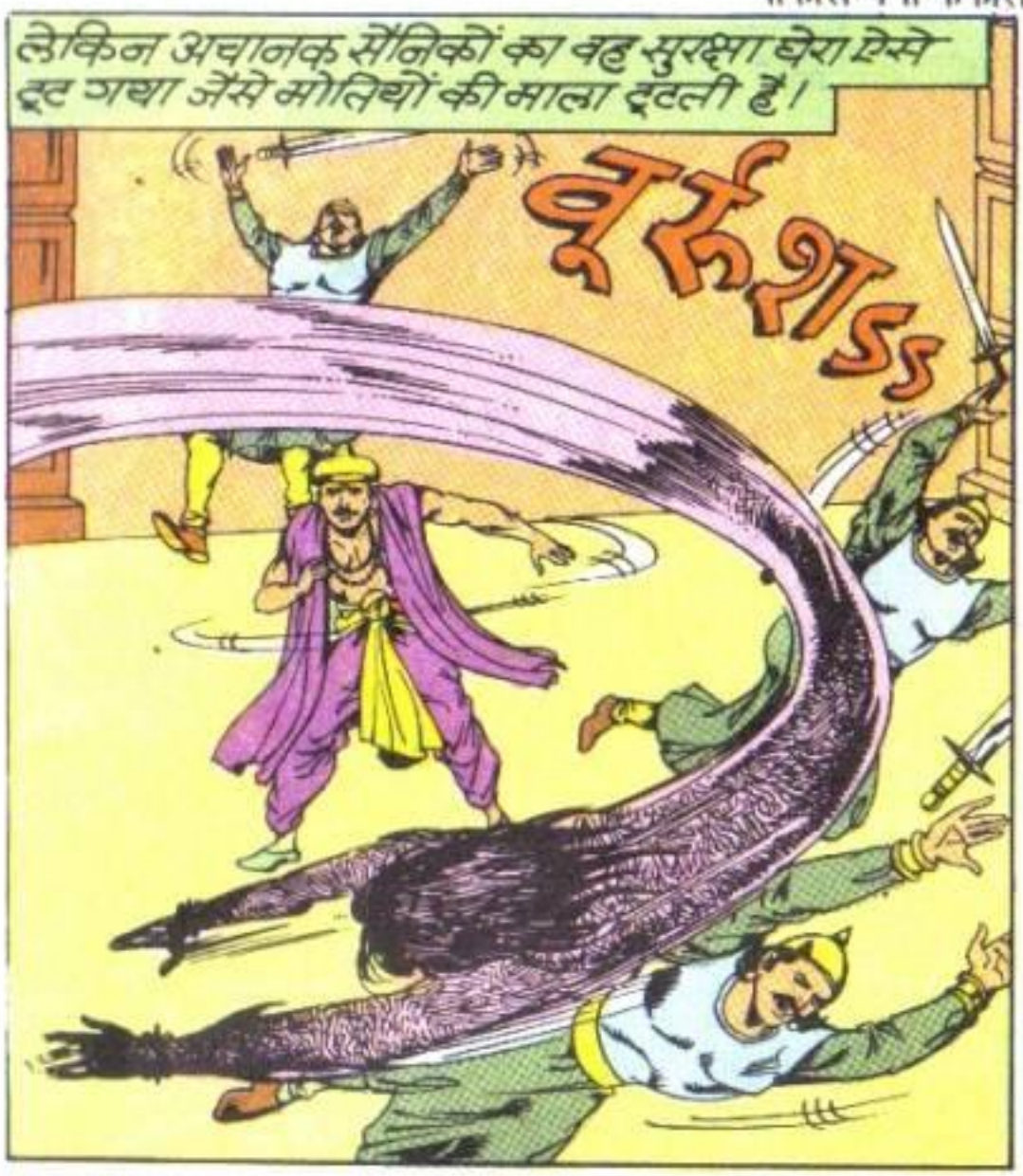
लेकिन अचानक सैनिकों का वह सुरक्षा घेरा ऐसे टूट गया जैसे मोतियों की माला टूटती है।
वूर्रशsss

मृत्यु से कोई कितना भी भागना चाहे लेकिन मृत्यु उस तक पहुंच जाती है !

शायद तेरे भाग्य में इसी राज दरबार में मरना लिखा है।...

आऊ !
इस राज दरबार में पुरोहित जी की नहीं तेरी मृत्यु लिखी है शैतान...

... ऐसा ना होता तो तू यहां मरने कभी नहीं आता !
मेरे स्वामी ने अपने उद्देश्य के लिए शव तो पुरोहित का ही गिराने को कहा है !...
फड़ाक

... अगर पुरोहित का शव गिराने से पहले मुझे हज़ारों शव और भी गिराने पड़े तो मैं हिचकूंगा नहीं...
ओफ्फ ! इसकी आंखों से अत्यंत घातक किरणें निकल रही हैं ।मुझे सबसे पहले सभी राज दरबारियों से कहना चाहिए...

...भाग जाओ यहां से !
सभी भाग जाओ ! मुझे सभी से कोई मतलब नहीं !...

...मुझे तो मतलब है कि ये पुरोहित ना भाग पाए! जिसे मैंने अपना शिकार बनाना है !
ओफ्फ!
... इससे पहले कि वह मेरा या पुरोहित जी का किरणों से कोई अहित करे...

...मुझे उसके किरणों के स्रोत को प्रहारा की सहायता से बंद कर देना चाहिए!
ओह!
तू मुझे इतनी आसानी से शिकार नहीं करने देगा। ठीक है। मैं पहले इस वायु गोले से तेरा ही प्रबंध करता हूं।...
...जिसमें फंसकर तू ऐसे घूमता रहेगा जैसे चक्कर घिन्नी घूमती रहती है!
ओफ्फ!
सचमुच वायु गोले में फंसते ही ऐसे घूमा भोकाल...
...जैसे चक्कर घिन्नी घूमती है--
हा हा हा! अब तू ऐसे ही घूमता रह और अपनी खुली आंखों से देख कि मैं अपनी बंद आंखों से...
...कैसे शिकार करता हूं!
आहह
ओफ्फ! उस शैतान ने पुरोहित जी को ऐसे दबोच लिया जैसे सिंह हिरन को दबोचता है। अब अगर मैंने कुछ नहीं किया तो...

...वह एक झटके में ही पुरोहित जी की गर्दन मरोड़ देगा!

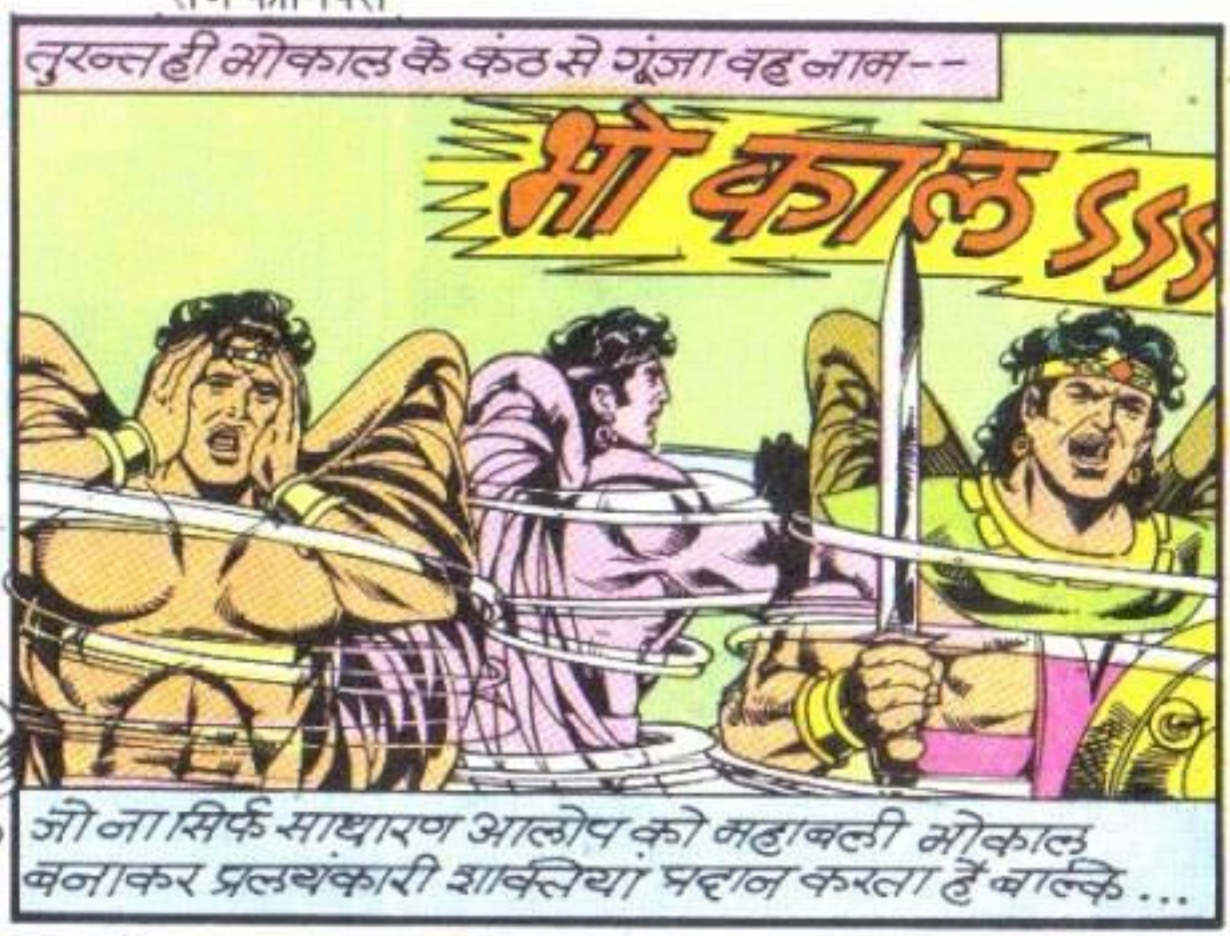
तुरन्त ही भोकाल के कंठ से गूंजा वह नाम--
भोकाल sss
जो ना सिर्फ साधारण आलोप को महाबली भोकाल बनाकर प्रलयंकारी शक्तियां प्रदान करता है बल्कि...

...उसे संकट के हर तूफान से बचाता है--

छोड़ पुरोहित जी को क्योंकि अब...

...तुझे अपने मृत्यु देवता के पास जाना है!
तेजी से लहराकर भोकाल ने उसे अपनी भुजाओं के उस शिकंजे में कस लिया--

जिनके बल को तुरन्त ही पहचाना उस शैतान ने--
बहुत जान है तेरे हाथों में। इनकी जकड़ से छूटना आसान नहीं लगता। लेकिन फिर भी तू ना मुझे जकड़े रह पायेगा और ना शिकार करने से रोक पायेगा क्योंकि...
...मैं परछाई के रूप में तेरे शरीर से छूटूंगा और...
!!
...अपना शिकार करके...
आहह
...यहां से चला जाऊंगा।
स्तब्ध रह गये भोकाल को...
...उस समय आश्चर्य का एक और झटका लगा जब उसकी भुजाओं में जकड़ा वह शैतानी जिस्म पानी की तरह फिसलता चला गया--
ओह!
और यह भोकाल की हार थी क्योंकि...

...ना तो वह उस शैतान को रोक पाया था...

...और ना पुरोहित श्रीमाली को बचा पाया था--
ओफ्फ! आखिर वह शैतान अपने उद्देश्य में सफल हो ही गया। और यह सब मेरे होते हुआ।...धिक्कार है मुझ पर!
दुखी मत हो महाबली! तुमने अपना कर्म किया। परिणाम तुम्हारी इच्छा नुसार नहीं निकला, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं इसलिए...

...पुरोहित जी की मृत्यु के बारे में सोचना छोड़कर उस संकट के बारे में सोचो जिसके कारण पुरोहित जी के प्राण गये...
...पुरोहित जी की भविष्यवाणी के अनुसार वह संकट शीघ्र ही संपूर्ण विश्व पर छा जायेगा!

ऐसा नहीं होगा मैं उस संकट को सिर उठाने से पहले ही कुचल डालूंगा!
...लेकिन ऐसा करने से पहले मुझे पुरोहित जी के गाव जाकर उनके परिवार वालों को पुरोहित जी की मृत्यु की सूचना पहुचाकर...

...उनकी सुरक्षा का कोई प्रबंध करना होगा !
पुरोहित श्रीमाली की मृत्यु की जिस सूचना को लेकर भोकाल विकासनगर से रवाना हो रहा था...

...वह तो पहले ही पुरोहित के घर पहुंच गई थी--
नहीं ! यह नहीं हो सकता !
ऐसा ही हुआ है बहन ! किसी दुष्ट हैवान ने पुरोहित जी की हत्या कर दी है।...
...उनकी आस्थियां अभी भी राजधानी में ही मौजूद हैं।

हे भगवान ! यह तूने किस कर्मों की सजा दी हमें ! ये तूने हमारे परिवार पर कौन सा संकट डाल दिया !
मत रो मां ! मत रो। हम पर जो संकट आया है वह दूर होगा !
पिताजी यूं असमय काल का ग्रास नहीं बन सकते !

याद है दादाजी ने कहा था कि अगर परिवार पर कोई संकट आये तो तुरन्त उनसे सम्पर्क किया जाये ! वे सब ठीक कर देंगे।
दादाजी पिताजी को दुबारा जीवन प्रदान कर देंगे !...

...मैं तुरन्त ही जाकर दादाजी से मिलता हूं!
हरि! रुक जा बेटे!
अपनी मां की एक ना सुनी हरिमोहन नामक उस बच्चे ने, आवेश में घर से बाहर दौड़ता चला गया वह -

और इसी के साथ वहां मौजूद उस शख्स के अधरों पर रहस्यमयी मुस्कान दौड़ गई -
पुरोहित की मृत्यु की सूचना पहुंचवाकर स्वामी का उद्देश्य सफल हो गया! पुरोहित का पुत्र अपने दादा से मिलने निकल पड़ा है।...

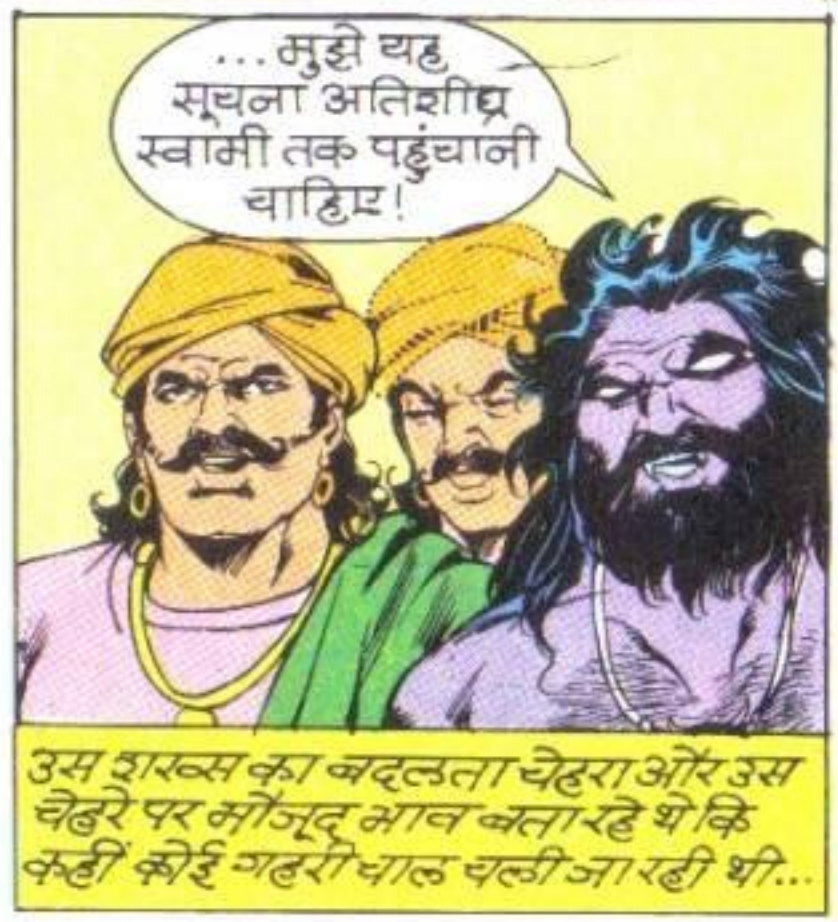
...मुझे यह सूचना अतिशीघ्र स्वामी तक पहुंचानी चाहिए!
उस शख्स का बदलता चेहरा और उस चेहरे पर मौजूद भाव बता रहे थे कि कहीं कोई गहरी चाल चली जा रही थी...

...और इस समय उस चाल का मोहरा था पुरोहित श्रीमाली का बेटा हरिमोहन...

...जो शीघ्र ही जंगल में स्थित इस गुफा में मौजूद था--
गुफा का वातावरण उसके मासूम हृदय में कम्पन पैदा कर रहा था,लेकिन फिर भी उसके अधरों पर थी वह पुकार-
दादाजी! दादाजी!...
...आप कहां हैं दादाजी! कृपया सामने आइये...
...देखिये हम भय से कांप रहे हैं!
ऐसा है तो...
...हमें सामने आना ही होगा!
दादाजी!
अपने सामने प्रकट हुए उस महात्मा को देखकर...
...बालक हरिमोहन दौड़कर उनसे जा लिपटा--
दादाजी!
अरे हरि! तेरी आंखों में तो आंसू हैं!...
...अपने दादा को बता क्या हुआ?
बालक की बात सुनकर चिन्ता की रेखाएं खिंच गई उस अनुभवी चेहरे पर--
ओह! वास्तव में संकट में फंसा हुआ है हमारा परिवार। अगर हमने यह प्रण नालिया होता कि जब तक हम मानवता की रक्षा के लिए अपना तप पूरा नहीं कर लेंगे इस पवित्र गुफा से बाहर नहीं निकलेंगे तो हम उस संकट को दूर करने स्वयं तेरे साथ चलते हरि!
...लेकिन तू चिन्ता मत कर सब ठीक हो जायेगा!...
...तेरे पिता बहुत समझदार हैं जीवित होकर सब ठीक कर लेंगे और वो जीवित होंगे...

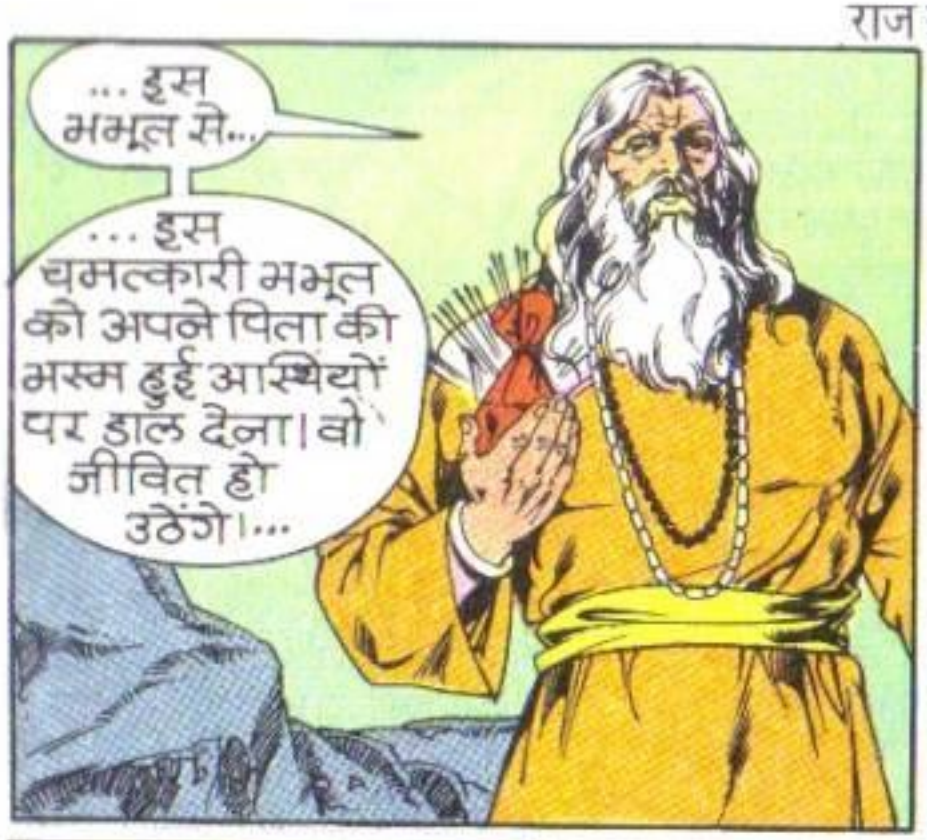
... इस भभूत से...
... इस चमत्कारी भभूत को अपने पिता की भस्म हुई आस्थियों पर डाल देना। वो जीवित हो उठेंगे।...

... जा बेटा हरि! अब देर मत कर।
अच्छा दादाजी!
बालक हरि ने अपने दादा को प्रणाम किया और...

...भस्म की पोटली लेकर गुफा से निकलकर घर की तरफ भाग खड़ा हुआ-

...लेकिन भागता नहीं रह सका वह ...

संभलकर बच्चे!

हरि ना सिर्फ उसके हाथ से मछली की तरह फिसला बल्कि अपने तेज नाखूनों से उसका चेहरा भी नोंच लिया...

उस शख्स के हाथों से छूटी काली किरणों की उस मोटी धार ने निश्चय ही हरिमोहन के शरीर को राख में बदल दिया होता...

...कि तू बहुत अधिक शक्तिशाली है!...
...हड्डीराज तेरी शक्ति को देखेगा भी और परखेगा भी!
हड्डीराज! ओह तो तू है उस शैतान का महा शैतान स्वामी जिसने पुरोहित जी की हत्या करवाई। अच्छा हुआ तू मुझे मिल गया! अब मुझे कई प्रश्नों के उत्तर मिल जायेंगे जैसे...

...कौन है तू? पुरोहित परिवार के ऊपर संकट बनकर क्यों छाया हुआ है? तेरी वजह से पूरा विश्व संकट में कैसे घिर जायेगा और...
...तू इस बालक के पीछे क्यों पड़ा है?
बहुत सारे प्रश्न एक साथ कर दिये तूने भोकाल! चल कुछ के उत्तर मैं तुझे दे ही देता हूं!

...उस बालक के हाथ में एक चमत्कारी भभूत है। उसी के लिए मैंने पुरोहित की हत्या की क्योंकि जो इस भभूत को दे सकता है वह एक ऐसी पवित्र गुफा में मौजूद है जिसमें पुरोहित परिवार के सदस्यों को छोड़कर ब्रह्माण्ड की कोई भी दुष्टशक्ति प्रवेश नहीं कर सकती। इसलिए मैंने उस भभूत को पुरोहित परिवार द्वारा ही प्राप्त करने की योजना बनाई...

...आज मेरी वह योजना सफल हो गई है। उस थैली में भरी भभूत पवित्र गुफा से बाहर आ गई है। अब मैं इसे हासिल करके तीनों लोकों पर अपना अधिकार जमाने वाली योजना को सफल करूंगा!
तेरी अब कोई भी योजना सफल नहीं होने वाली!
भोकाल तेजी से वार करने हड्डीराज की तरफ बढ़ा...

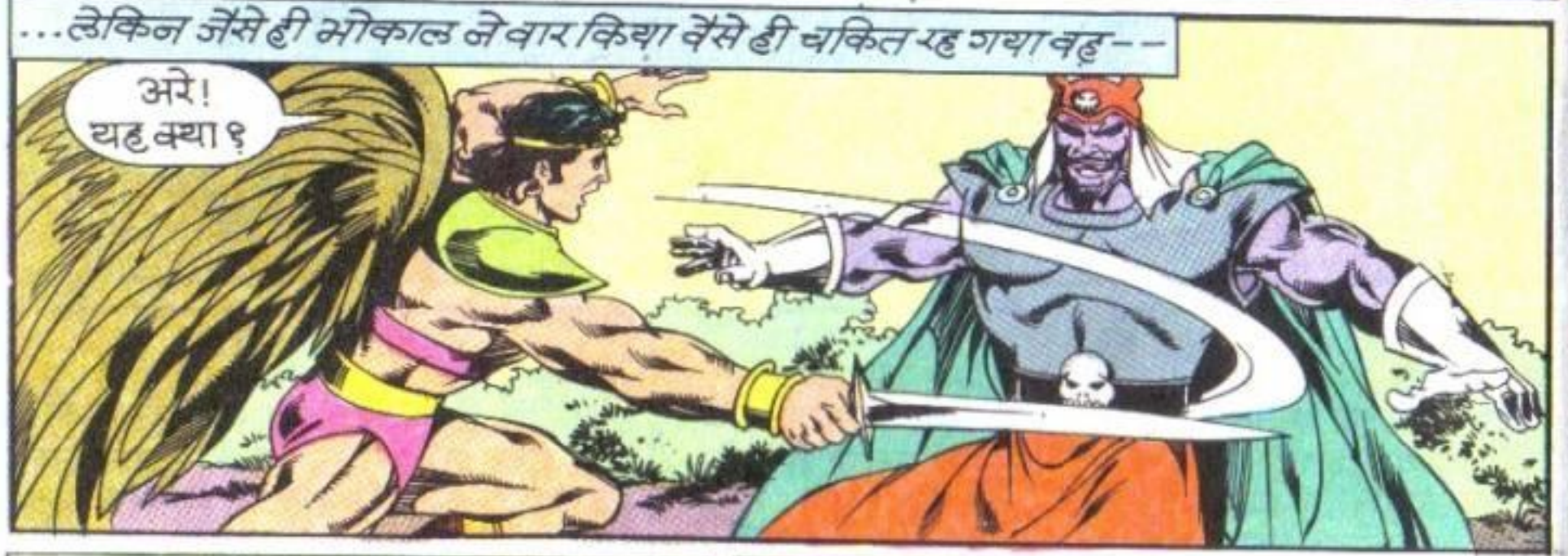
...लेकिन जैसे ही भोकाल ने वार किया वैसे ही चकित रह गया वह--
अरे! यह क्या?

पलक झपकते ही भोकाल की समझ में सारा माजरा आ गया--
यह हड्डीराज का वास्तविक रूप नहीं उसका प्रतिरूप मात्र है!
हा हा हा! ठीक पहचाना भोकाल! तुझे देखते ही मैंने यह रूप धारण कर लिया और ऐसा मैंने इसलिए किया क्योंकि मैं अपने उद्देश्य को पूरा करने से पहले किसी से भिड़ना नहीं चाहता...

...लेकिन मेरे इस रूप को धारण करने का मतलब यह नहीं है कि मैं इस भभूत की थैली को छोड़ दूंगा। वह तो मैं इस रूप में भी हासिल करूंगा। क्योंकि इस रूप में भी मैं अपने हाथ में प्रकट हुए इस शक्ति यंत्र से ऐसे वार कर सकता हूं।...

कहानी 19 पेज से जारी

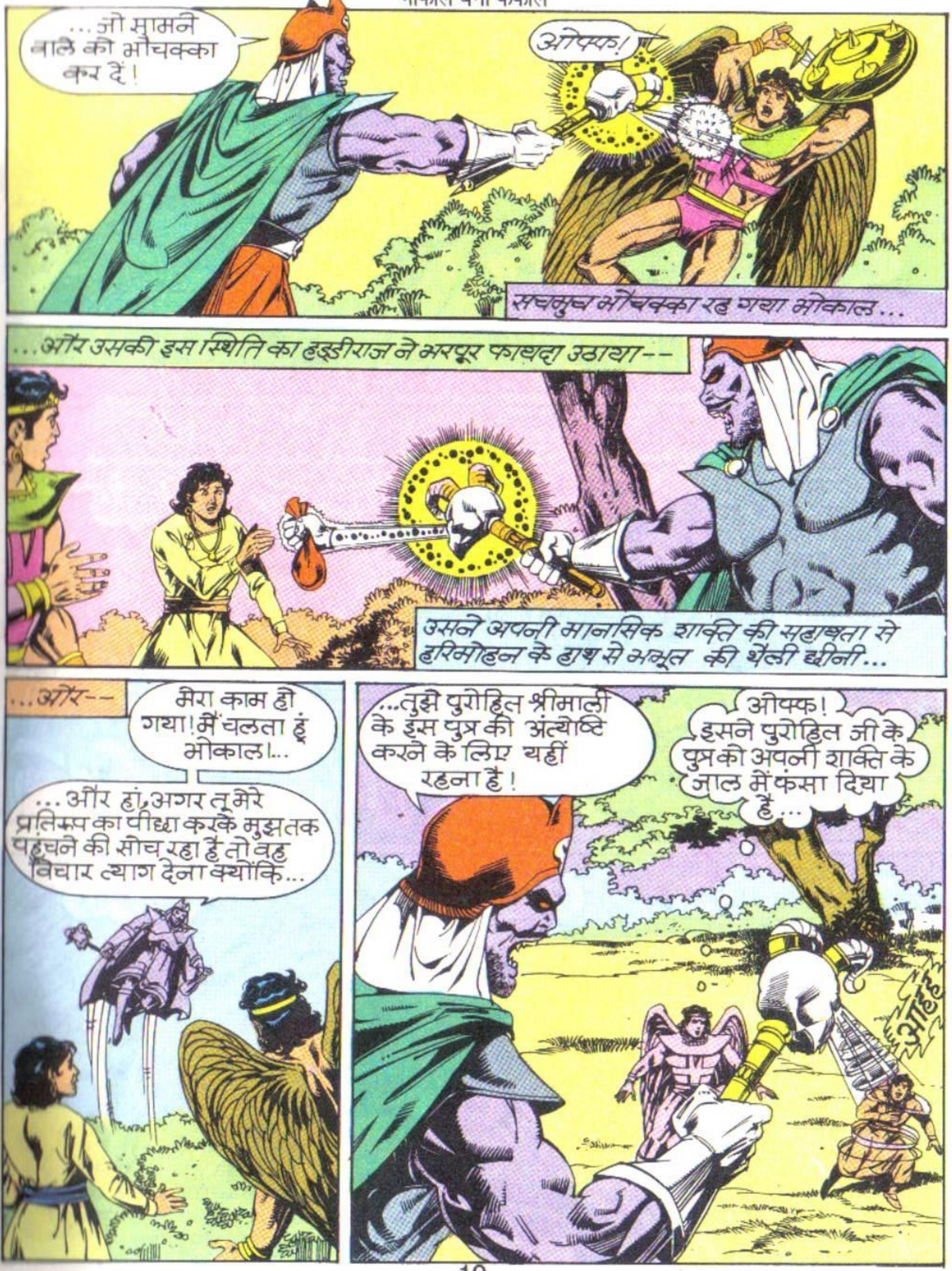
...जो सामने वाले को भौचक्का कर दें!
ओफ्फ!
सचमुच भौचक्का रह गया भोकाल...
...और उसकी इस स्थिति का हड्डीराज ने भरपूर फायदा उठाया--
उसने अपनी मानसिक शक्ति की सहायता से हरिमोहन के हाथ से भभूत की थैली छीनी...
...और--
मेरा काम हो गया! मैं चलता हूं भोकाल!...
...और हां, अगर तू मेरे प्रतिरूप का पीछा करके मुझ तक पहुंचने की सोच रहा है तो वह विचार त्याग देना क्योंकि...
...तुझे पुरोहित श्रीमाली के इस पुत्र की अंत्येष्टि करने के लिए यहीं रहना है!
ओफ्फ! इसने पुरोहित जी के पुत्र को अपनी शक्ति के जाल में फंसा दिया है...
आहह

...अब मैं इस बालक के प्राणों को संकट में छोड़कर उसके पीछे जाने की मूर्खता हरगिज नहीं कर सकता!
आहSSS

...मोकाल बालक हरिमोहन के प्राण बचाने में जुट गया –
ओफ्फ! जिन शिकंजों ने इस बालक को जकड़ रखा है वे मेरी ताकत से टस से मस भी नहीं हो रहे।...
...इन्हें तलवार से काटना होगा!
आहS

ओह नहीं! तलवार तो इन शिकंजों पर खरोंच भी नहीं डाल पा रही!...
...इसका मतलब इन शिकंजों का टूटना आसान नहीं!

...लेकिन इन्हें तोड़ना तो होगा ही क्योंकि इनका कसाव तेजी से बालक के शरीर पर बढ़ता ही जा रहा है।...
...कुछ ही देर में ये इस बालक के प्राण ले लेंगे!
लेकिन ये टूटेंगे कैसे?
आहSSS
मोकाल का चेहरा तेजी से चिन्ता की लकीरों से भरता जा रहा था –

जबकि इधर हड्डीराज के चेहरे पर एक कान से दूसरे कान तक खिंची हुई थी शैतानी मुस्कान की लकीर--
किसी भी मनुष्य के नष्ट हो चुके शरीर के कणों पर पड़कर उसे साकार रूप प्रदान करने वाली इस भभूत को आखिर मैंने अपने दिमाग के बल पर प्राप्त कर लिया। अब साकार होगा तीनों लोकों को विजय करने का मेरा सपना!...
...और उसकी शुरूआत तब होगी...
...जब भभूत के बल पर मैं तैयार करूंगा अपनी एक ऐसी सेना जो कहलायेगी...
...हड्डीराज की शैतान सेना!
हा हा हा

...कुछ ही क्षणों बाद उस भभूत की जो प्रतिक्रिया हुई उसे देखकर तो खुद हड्डीराज जैसे शैतान की भी आंखें अविश्वास की अधिकता में फैलती चली गईं...
...क्योंकि उसकी फटी आंखों के सामने पृथ्वी से उठकर खड़े हो रहे थे वे योद्धा जो वर्षों पहले समाप्त हो चुके थे--
...और उनकी संख्या एक दो में नहीं...
...सैकड़ों में थी-
हा हा हा! हड्डीराज की शैतान सेना तैयार हो गई। अब शीघ्र ही ब्रह्माण्ड में गूंजेगा एक ही नाम हड्डीराज...
...सिर्फ हड्डीराज!
इधर हड्डीराज अपने उद्देश्य में सफल हो गया था...

...और इधर भोकालबालक हरिमोहन को बचाने का उपाय सोचने में--
इस बालक को हड्डीराज की इस दुष्टशक्ति से बचाने का उपाय मुझे सूझ गया लेकिन इसके लिए मुझे इसे लेकर...
आहSSS
...यहां से उड़ना होगा और पहुंचना होगा...
...उस गुफा तक जहां इसके दादा यानी महात्मा योगाचार्य तपस्या में लीन हैं !
आहSSS
...और इस गुफा तक पहुंचकर अब मुझे ज्यादा कुछ नहीं करना सिर्फ इस बालक को गुफा के अंदर धकेलना है। बाकी का काम गुफा को घेरे हुई वह पवित्र शक्तियां अपने आप कर देंगी।...

हड्डीराज का शैतानी खेल शुरू भी हो गया था--

हा हा हा

... और ...

...विकासनगर की राजधानी उसका निशाना भी बन चुकी थी-
रुक जाओ!
...तुम सबका अगला कदम मृत्यु के आंगन में पड़ेगा!
सामने विकासनगर का सेनापति अपनी सेना की एक बड़ी टुकड़ी के साथ मौजूद है। मैं उनसे उलझकर व्यर्थ ही अपनी शक्ति नहीं गंवाना चाहता इसलिए...
...आगे बढ़ो मेरे सेवकों और उनका मुंड तोड़ जवाब दो लेकिन ध्यान रखना इस जवाब में उनकी हड्डी मत तोड़ देना क्योंकि...
...मनुष्यों की हड्डियों से हड्डीराज को बहुत प्रेम है...
...एक-एक हड्डी को संभालकर सजोकर रखना चाहता है!...
...हड्डीराज! हा हा हा!
हड्डीराज के हाथों से निकली किरणें सामने खड़े लोगों को अपनी चपेट में लेने लगीं-

दूसरे ही क्षण किरणों की चपेट में आये लोग ऐसे चीखे मानों उनकी आत्माएं उनका शरीर छोड़ रही हों-

आहह

आहSS

लेकिन ऐसा नहीं था-

आहह

उन लोगों की आत्मा शरीर नहीं छोड़ रही थी बल्कि...

...उनकी हड्डियां उनका शरीर छोड़ रही थीं-

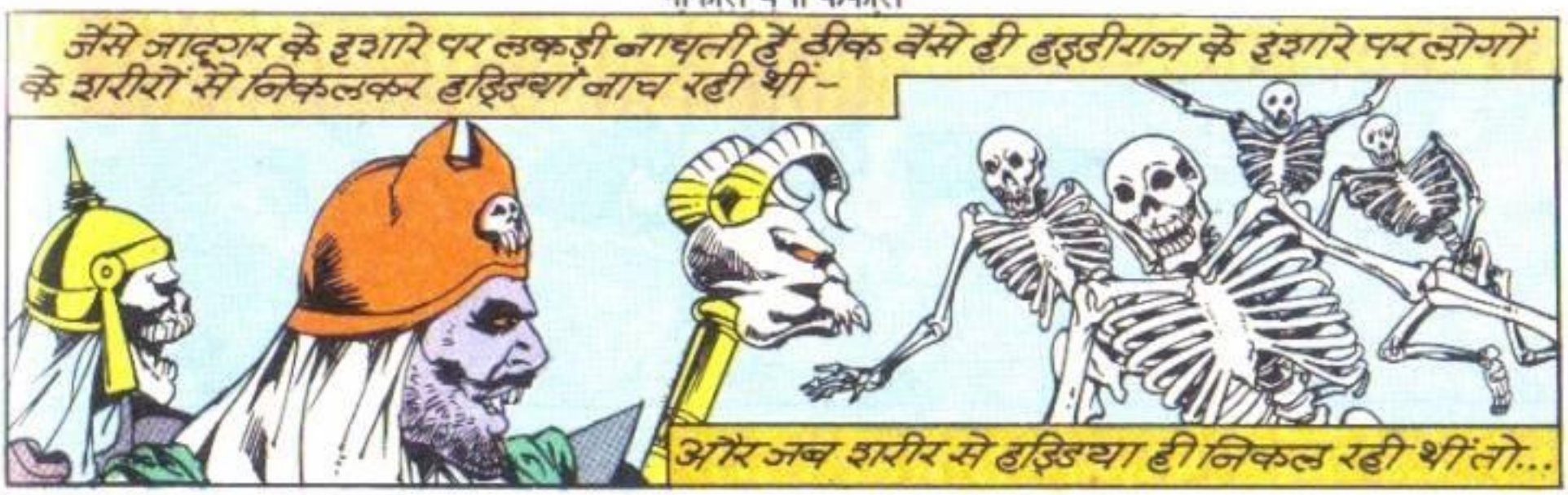
जैसे जादूगर के इशारे पर लकड़ी नाचती है ठीक वैसे ही हड्डीराज के इशारे पर लोगों के शरीरों से निकलकर हड्डियां नाच रही थीं-
और जब शरीर से हड्डियां ही निकल रही थीं तो...

...लोगों का लुंज-पुंज होकर गिरना स्वाभाविक ही था-

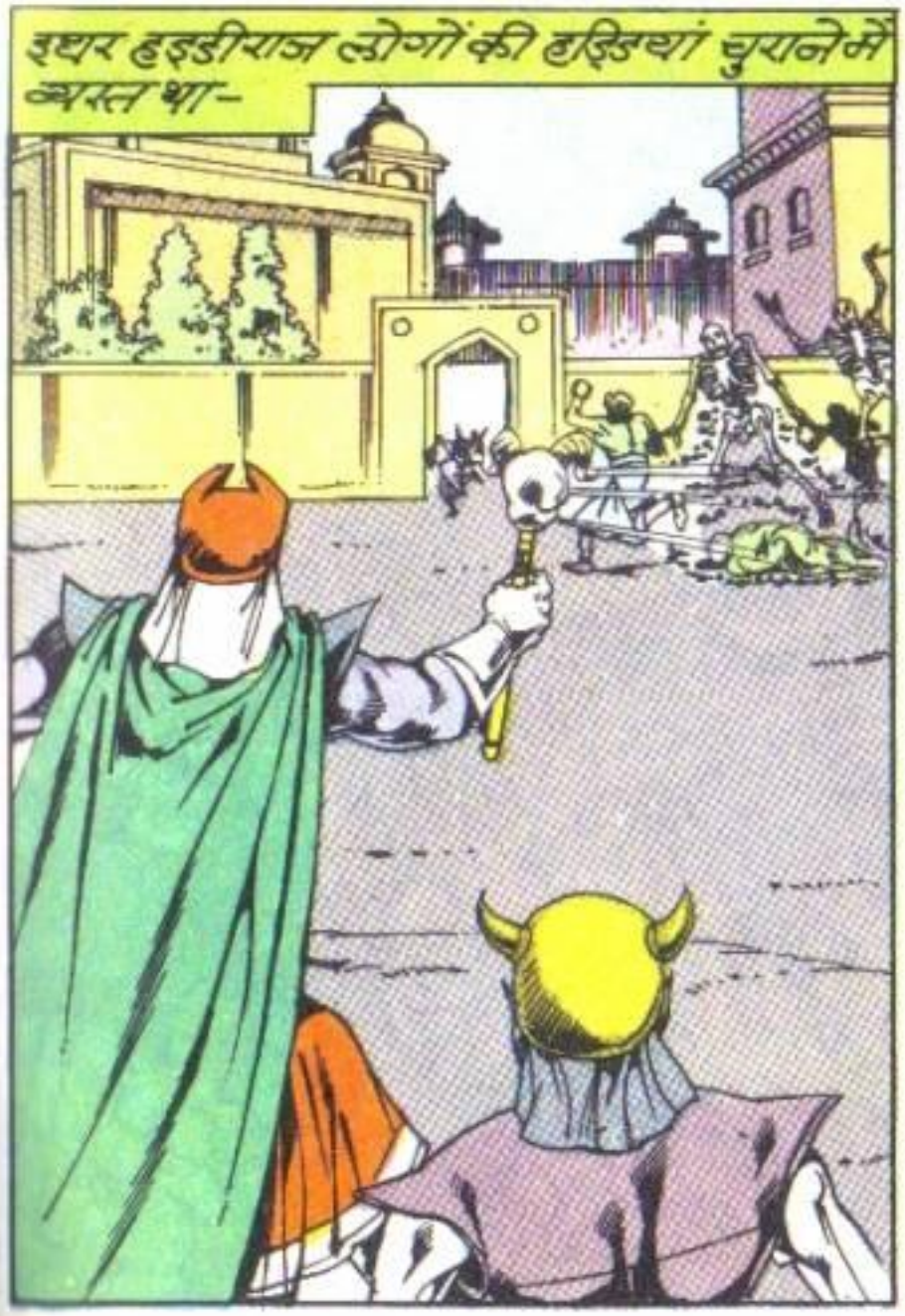
इधर हड्डीराज लोगों की हड्डियां चुराने में व्यस्त था-

और इधर उसके सेवक योद्धा सेनापति प्रवीण सिंह और अन्य सैनिकों को पानी पिलाने में व्यस्त थे-
ओफ्फ! इन योद्धाओं के शरीर पर ना तो घाव हो रहे हैं और ना इनके शरीरों से खून निकल रहा है और...

...ना उनको अंग कटने से कोई असर पड़ रहा है!

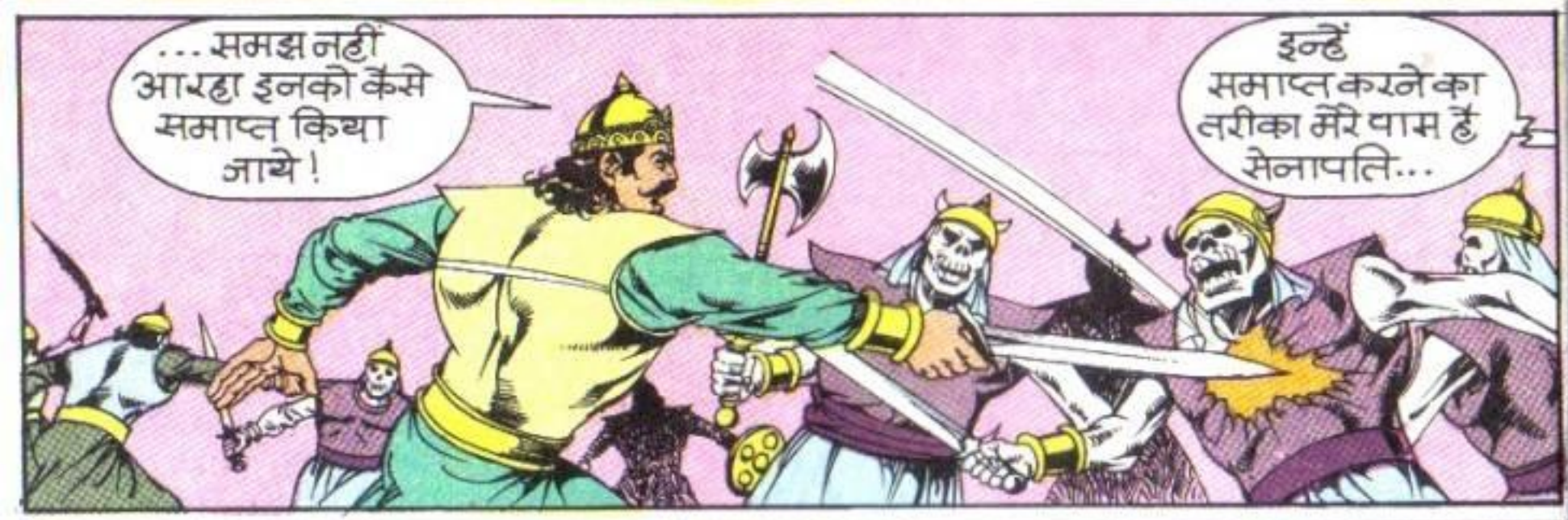
...समझ नहीं आ रहा इनको कैसे समाप्त किया जाये!
इन्हें समाप्त करने का तरीका मेरे पास है सेनापति...

...यह ज्वालाशक्ति जो इनके शरीर से टकरायेगी तो...

...इन्हें भस्म कर डालेगी!

भोकाल के उस कारनामें ने सैनिकों के उत्साह को दुगना कर दिया। उत्साह से चीख उठे सभी-

महाबली भोकाल की...

जय

उस जयघोष को सुनकर तेजी से पीछे पलटा हड्डीराज-

ओह! भोकाल! तो तूने यहां आकर मेरे सेवक योद्धाओं को नष्ट कर दिया।...

... कोई बात नहीं।...

... चलता हूं लेकिन एक क्षण...

... जाते- जाते तेरी हड्डियां तो ले जाऊं!
शैतान सैनिकों से घिरे भोकाल के पास उन किरणों से बचने का कोई रास्ता नहीं था...

...इसलिए ना वह उन किरणों को अपने शरीर में प्रवेश करने से रोक पाया और -

ना शरीर से निकलती अपनी हड्डियों को-

ओफ्फ

और जैसे ही हड्डियों ने भोकाल का शरीर छोड़ा...

...वैसे ही वह गीली मिट्टी के लोदे की तरह जमीन पर बैठता चला गया-

ओफ्फ

अब अपने शैतान सैनिकों के साथ ठहाका लगाता वहां से चलता बना हड्डीराज -
हा हा हा

और मोकाल उसे जाता देखते रहने के सिवा कुछ न कर सका -
ओफ्फ! अन्य लोगों की तरह हड्डीराज मेरी भी हड्डियों को चुराने में सफल हो गया है। लेकिन हड्डीराज हड्डियों की चोरी क्यों कर रहा है?
... क्या करना चाहता है वह हड्डियों के बल पर। कहीं इन हड्डियों का संबंध विश्व पर आने वाले उस संकट से तो नहीं जिसके बारे में पुरोहित श्रीमाली जी ने बताया था।

अगर मैं श्रीमाली जी के पिता महात्मा योगाचार्य से जाकर मिलूं तो वे मुझे इस बारे में अवश्य ही सब कुछ बता सकते हैं। मुझे उनसे तुरन्त ही मिलना होगा लेकिन...

... मैं खड़ा हो नहीं सकता...
पर फिर भी मुझे महात्मा योगाचार्य की गुफा तक पहुंचना ही है। इसलिए...

... मुझे प्रहारा से अपने शरीर को सहारा देने वाले कुछ यंत्र बनाने होंगे!...

...ताकि मैं उनकी सहायता से खड़ा होकर..

...अपने पंखों की सहायता से उड़ सकूं!
आज बड़े काम आ रहे हैं ये पंख। इन पंखों का मेरे कंकाल से कोई संबंध नहीं इसलिए इनकी हड्डियां अभी भी सही-सलामत हैं और मुझे पहली सी गति प्रदान कर रही हैं!

जल्द ही--
इस पवित्र गुफा तक तो मैं पहुंच गया हूं लेकिन पुरोहित परिवार का ना होने के कारण मैं गुफा में प्रवेश नहीं कर सकता और अपने प्रण के कारण महात्मा योगाचार्य बाहर नहीं आ सकते!
तुम सही सोच रहे हो महाबली! हमने वास्तव में गुफा से बाहर ना आने का प्रण लिया हुआ था परन्तु

...यह प्रण हमने मानवता के भले के लिये लिया था लेकिन तुम्हारी दशा देखकर लग रहा है कि अब हमारे प्रण का कोई औचित्य नहीं रहा क्योंकि अगर हम बाहर ना आये तो वह मानव और मानवता ही नहीं बचेगी जिसके भले के लिए हम तप कर रहे हैं!
गुफा से निकलकर--

मोकाल के सामने आ खड़े हुए महात्मा योगाचार्य-
क्षमा कीजियेगा महात्मन! शरीर में आस्थियां नहीं हैं इसलिए आपका आशीर्वाद लेने के लिए आपके चरणों में नहीं झुक सकता!
कृपा करके मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर देकर मेरी शंकाओं का निवारण कीजिये!
मोकाल ने अपने प्रश्न बताये तो-

उनके उत्तर में गम्भीर स्वर में बोले महात्मा योगाचार्य-
हमारे पोते से दिव्य मभूत छीन लेने के पीछे हड्डीराज का उद्देश्य अत्यंत भयानक है महाबली! उस मभूत के बल पर वह एक ऐसी शैतान सेना का निर्माण करना चाहता है जिसकी सहायता से वह देवलोक पर चढ़ाई करके विजय प्राप्त कर ले!

परन्तु वह जानता है कि अगर वह देवलोक पर चढ़ाई करने में सफल भी हो गया तो देवराज इंद्र के वज्र का सामना नहीं कर सकता
इसलिए वह किसी ऐसे पुण्य मनुष्य की आस्थियों की खोज में है जिसका अस्त्र बनाकर वह इंद्र के वज्र को मात कर सके!...

...उसे यह नहीं पता कि वह पुण्य मनुष्य कौन है जिसकी आस्थियों से वह इंद्र के वज्र को टक्कर देने वाला अस्त्र बना सकता है इसलिए वह हर उस मनुष्य की आस्थियों की चोरी कर रहा है जो उसके सामने पड़ रहा है।...
ऐसा करने के पीछे उसकी यह मंशा है कि कभी तो उसकी खोज पूरी होगी।...
...और ये मुझे अत्यंत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि...

...तुम्हारी आस्थियां चुराते ही उसकी खोज पूरी हो गयी !
हां महाबली! तुम ही वह पुण्य मनुष्य हो। जिसकी आस्थियों से अस्त्र बनाकर देवराज इंद्र के वज्र को चूर-चूर किया जा सकता है!
मेरी आस्थियां!

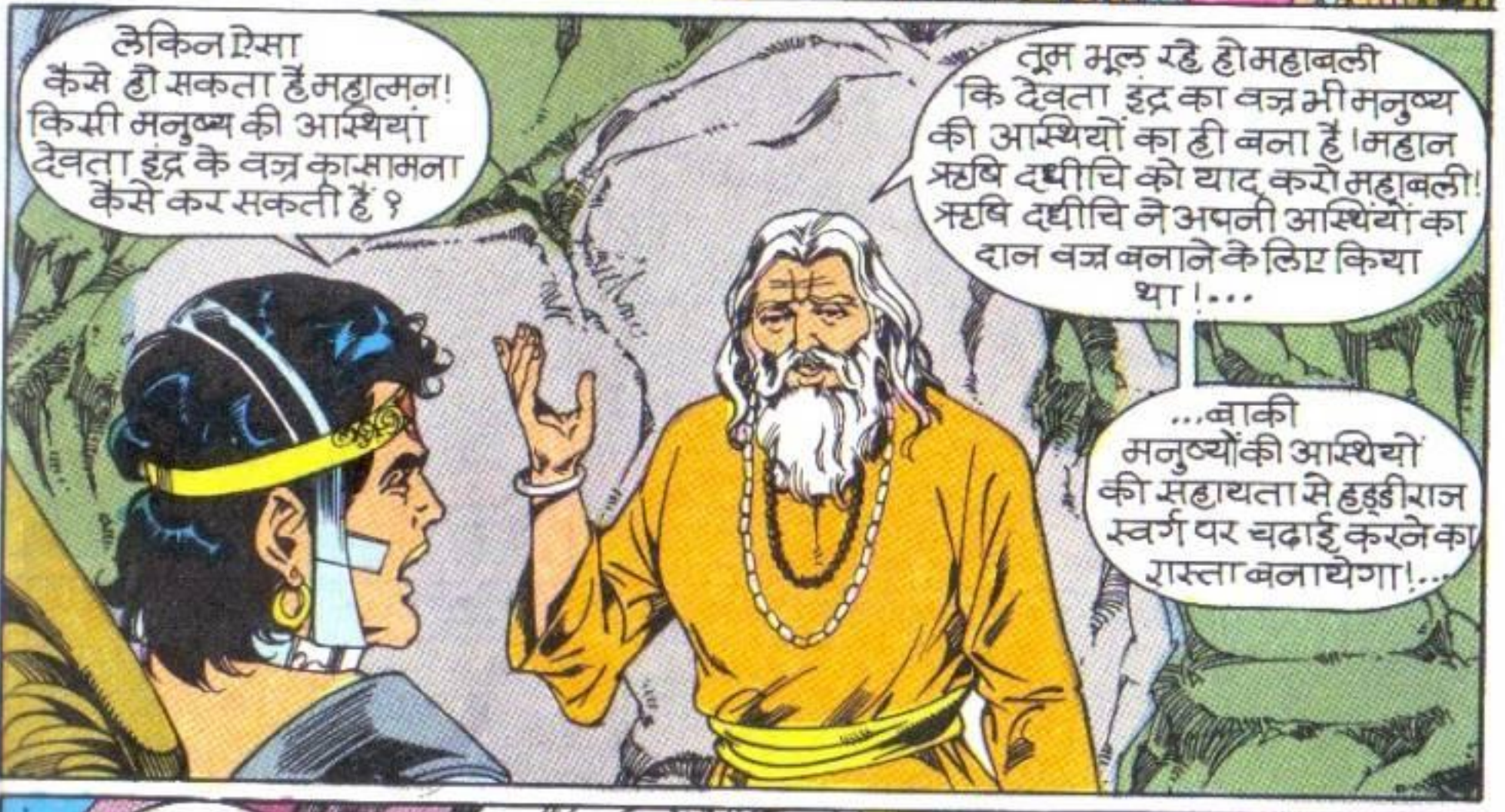
लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है महात्मन! किसी मनुष्य की आस्थियां देवता इंद्र के वज्र का सामना कैसे कर सकती हैं ?
तुम भूल रहे हो महाबली कि देवता इंद्र का वज्र भी मनुष्य की आस्थियों का ही बना है। महान ऋषि दधीचि को याद करो महाबली! ऋषि दधीचि ने अपनी आस्थियों का दान वज्र बनाने के लिए किया था!...
...बाकी मनुष्यों की आस्थियों की सहायता से हड्डीराज स्वर्ग पर चढ़ाई करने का रास्ता बनायेगा!...

...एक क्षण रुको महाबली!
अपनी बात बीच में रोककर महात्मा योगाचार्य ध्यान मग्न हो गये-

अचानक उनका चिंता से भरा स्वर भोकाल के कानों में पड़ा –
ओह! अनर्थ हो गया महाबली!...
"...हड्डीराज ने मनुष्यों की अस्थियों का रास्ता बनाकर देव लोक पर चढ़ाई शुरू कर दी है।..."
"...उसके पीछे उसकी शैतान सेना है और !!.
"...और उसके हाथ में है तुम्हारी अस्थियों का बना हुआ हथियार..."

...जिसे वह शीघ्र ही सिद्ध करके वज्र से भी घातक और विध्वंसक अस्त्र बना लेगा।...
...और उसे सिद्ध करने के लिए वह पहले एक यज्ञ करेगा...

...उसे रोकना होगा महाबली ! अन्यथा वह इतना अधिक शक्तिशाली हो जायेगा कि फिर उसे कोई नहीं रोक सकेगा !
मैं ऐसा नहीं होने दूंगा महात्मन !...

...मैं उसे रोकने जा रहा हूं !
रुक जाओ महाबली ! बिना अस्थियों के इस शरीर के बल पर तुम उसे नहीं रोक पाओगे !...
तुम्हारे शरीर को अस्थियों की आवश्यकता है !

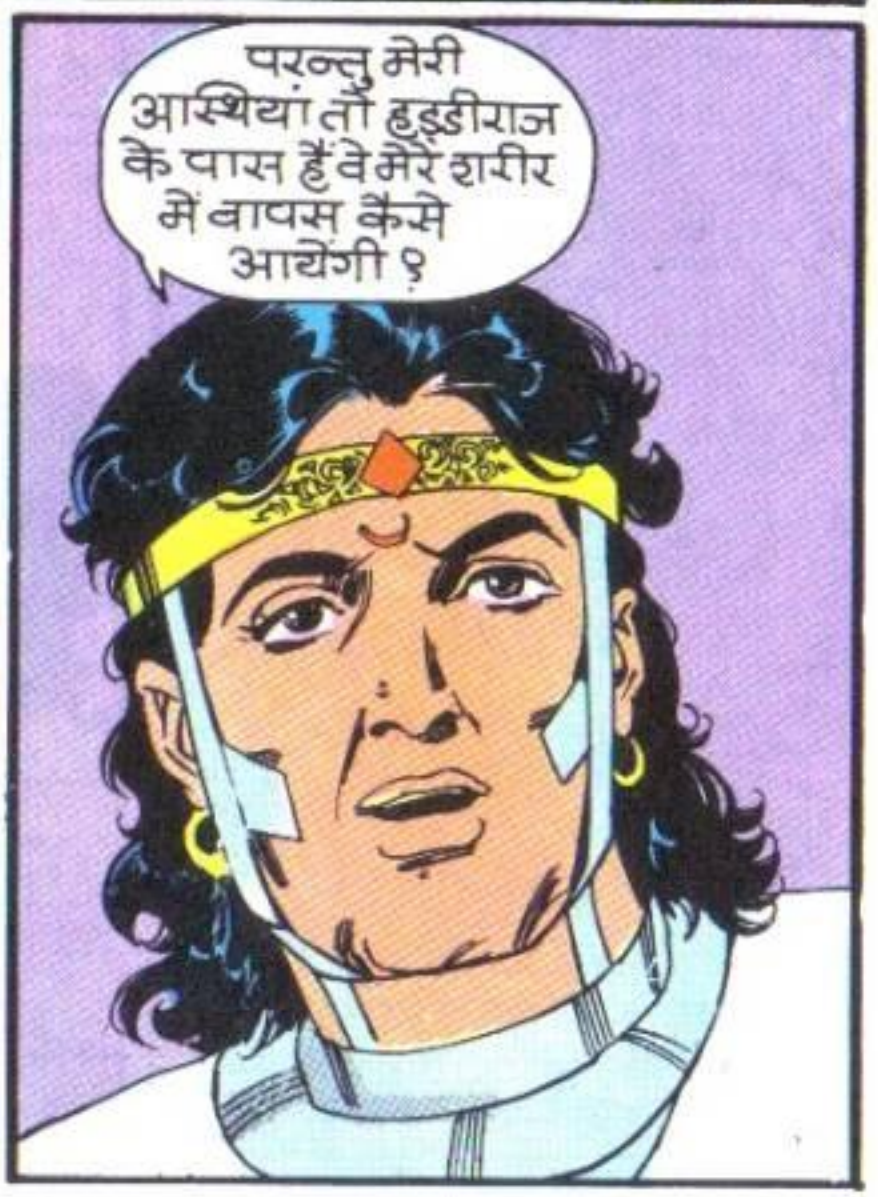
परन्तु मेरी अस्थियां तो हड्डीराज के पास हैं वे मेरे शरीर में वापस कैसे आयेंगी ?

अपनी आस्थियों को तो तुम्हें स्वयं ही प्राप्त करना होगा परन्तु फिर भी तुम्हारे शरीर को आस्थियां मिलेंगी
ऐसा कैसे होगा महात्मा?

जवाब में एक मोहक मुस्कान खेल गई महात्मा योगाचार्य के अधरों पर-
सैंकड़ों वर्षों पुराना इतिहास आज फिर दोहराया जायेगा।...
...मानवता की रक्षा के लिए आज फिर महर्षि दधीचि की तरह किया जायेगा...

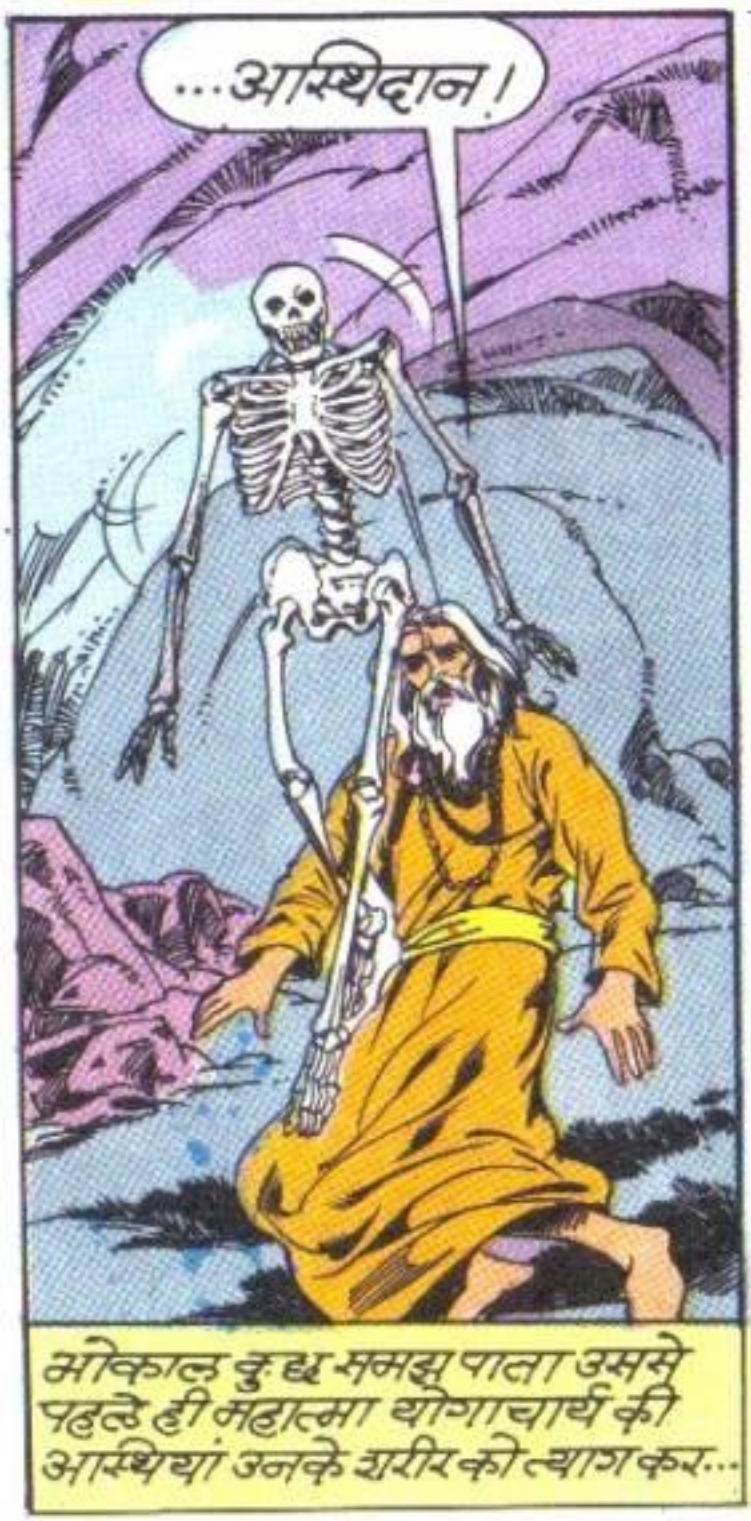
...अस्थिदान!
मोकाल कुछ समझ पाता उससे पहले ही महात्मा योगाचार्य की आस्थियां उनके शरीर को त्याग कर...

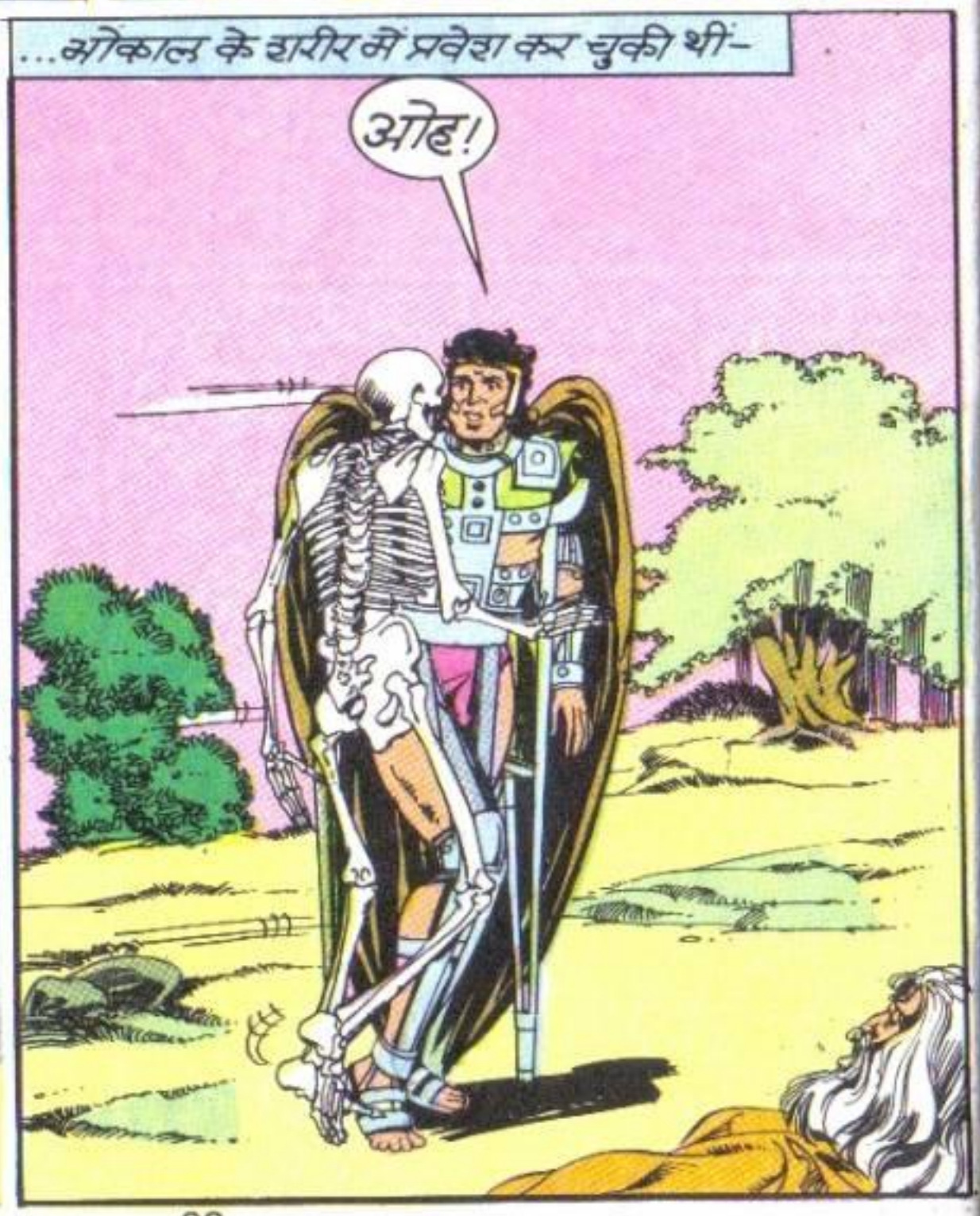
...मोकाल के शरीर में प्रवेश कर चुकी थीं-
ओह!

अचंभित भोकाल आस्थिहीन महात्मा के शरीर को गिरते देखता रहा--
...य..ये आपने क्या किया महात्मन ?
वही जो मानवता की भलाई के लिए उत्तम है। हमारी आस्थियों ने तुम्हारे शरीर को पुन: खड़ा कर दिया है इसलिए यहां खड़े रहकर प्रश्न करने में समय मत गंवाओ...
...अपने शरीर से कृत्रिम सहारों को हटाओ और अपने उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए बढ़ जाओ।
...परन्तु एक बात ध्यान रखना महाबली ! हमारे और तुम्हारे शरीर की संरचना भिन्न-भिन्न है। इसलिए हमारी आस्थियां तुम्हारे शरीर का साथ अधिक देर तक नहीं दे सकेंगी...
...तुम्हें अतिशीघ्र अपनी हड्डियां प्राप्त करनी होंगी। जब तुम ऐसा करने वाले होओगे तो हमारी आस्थियां स्वयं तुम्हारे शरीर का साथ छोड़ देंगी।...
जो आज्ञा महात्मन !
...अब जाओ !
भोकाल ने पूरी श्रद्धा के साथ उस आस्थिदान कर्ता को प्रणाम किया...
...और अपने पंखों की सहायता से द्रुतगति से उड़ चला उधर...

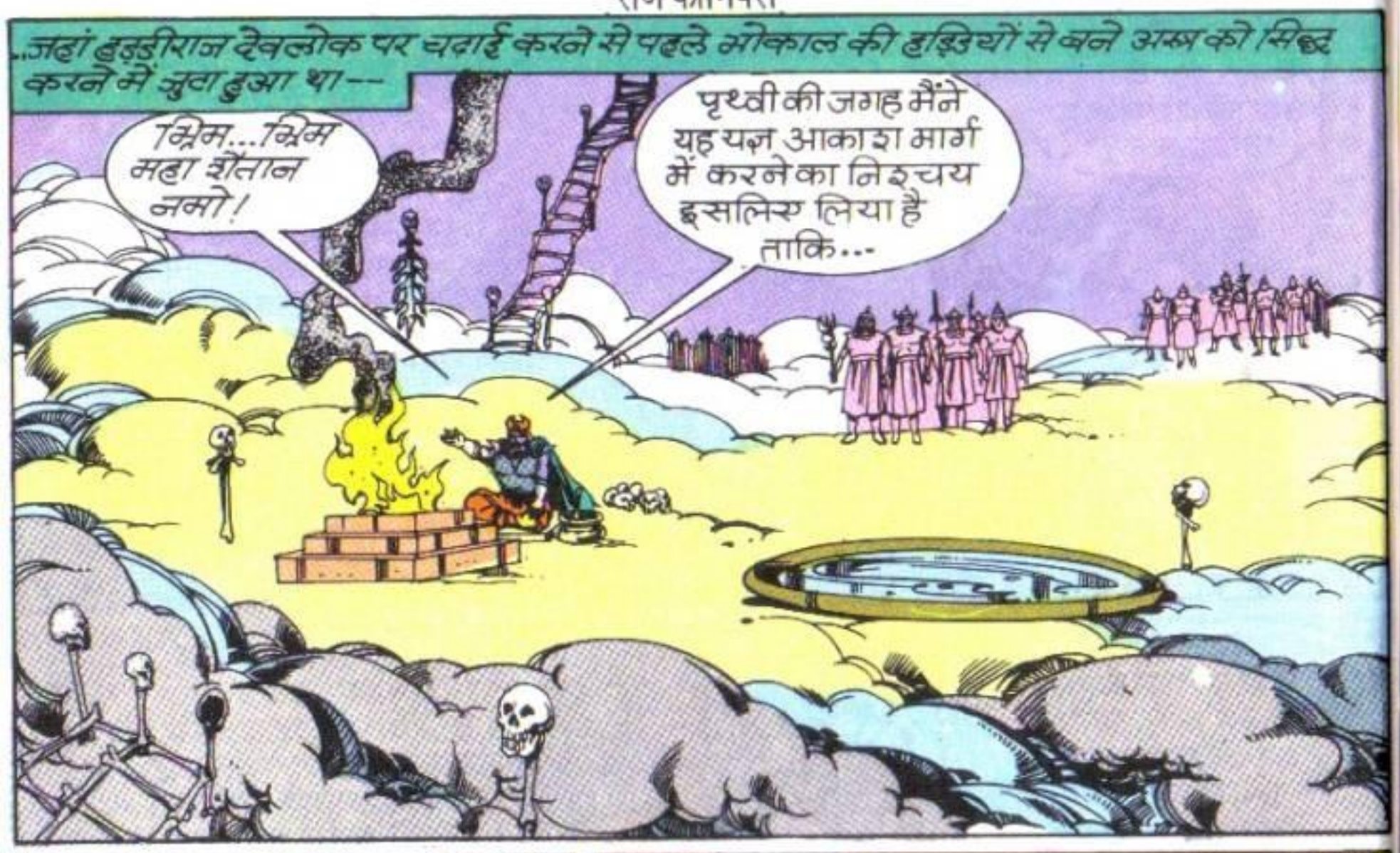

यज्ञ कुण्ड में आहुति देता हड्डीराज का हाथ अचानक ऐसे ठिठका जैसे उसे एकाएक लकवा मार गया हो...

...और यह हालत सिर्फ उसके हाथ की ही नहीं बल्कि सारे शरीर की थी क्योंकि...

...उसे हवा में बने हड्डियों वाले रास्ते पर बेहद तेजी से आगे बढ़ता नजर आ रहा था–

भोकाल!...

...य... ये भोकाल ही तो है जो तेजी से इधर ही बढ़ता आ रहा है!...

...परन्तु वह सामान्य रूप से खड़ा होकर चल कैसे रहा है?

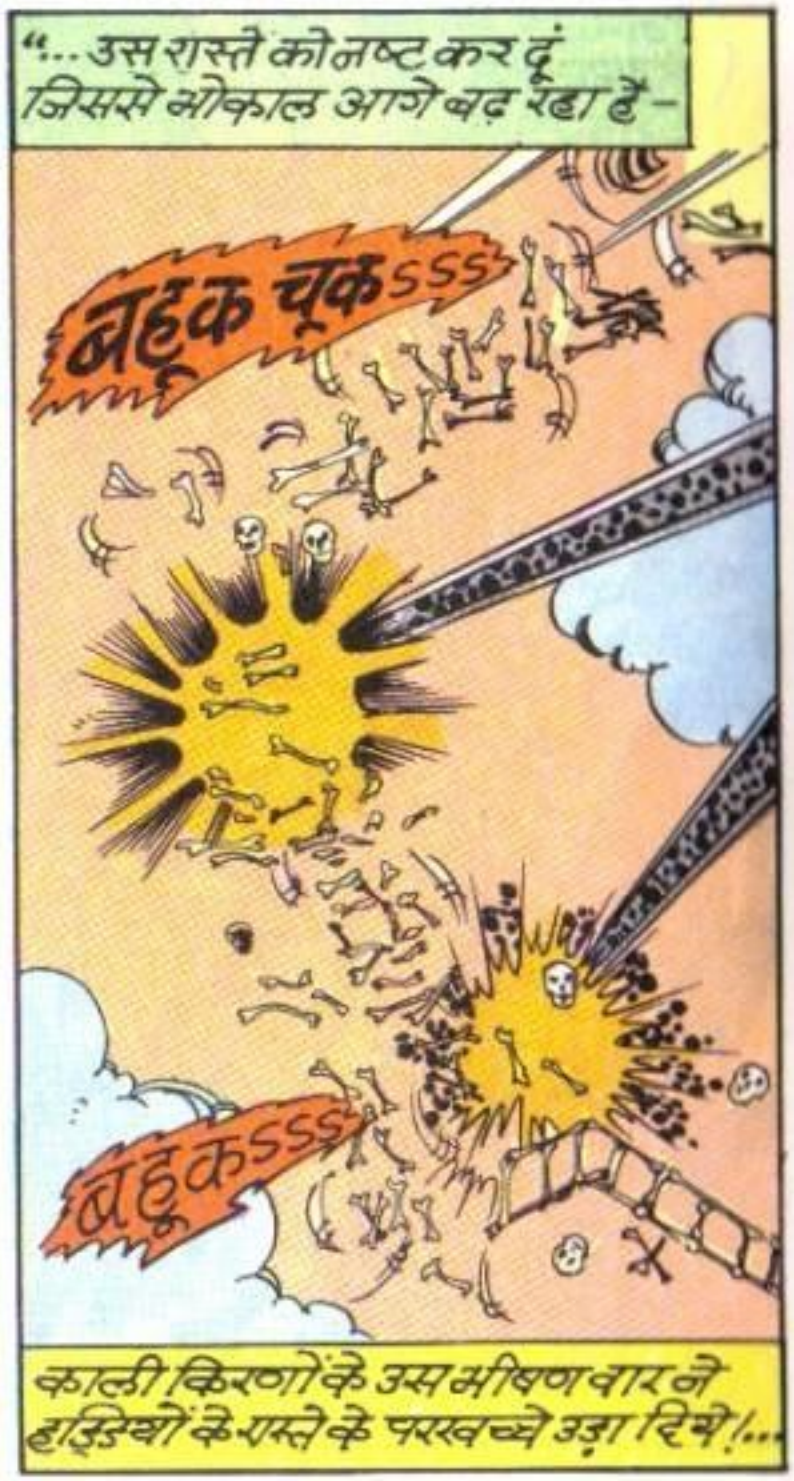

...इसी के साथ भोकाल नीचे की तरफ ऐसे लहरा उठा जैसे पेड़ से टूटा नारियल -
लेकिन भोकाल और नारियल में एक बहुत बड़ा फर्क था -
नारियल के पंख नहीं होते इसलिए वह भोकाल की तरह उड़ नहीं सकता -
मूर्ख हड्डीराज! कंकाल रास्ते को नष्ट करके तूने अपना ही नुकसान किया है। भोकाल पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ने वाला क्योंकि...
...भोकाल अपने पंखों की सहायता से उड़ सकता है।
हा हा हा! अपना नुकसान कर लूं इतना मूर्ख नहीं हूं मैं। कंकाल रास्ते को नष्ट करने से पहले ही मैं जानता था कि तू उड़कर मेरी तरफ बढ़ेगा! ...

... इसलिए मैंने इसका प्रबंध पहले से ही कर रखा है कि तू उड़कर मेरे पास पहुंचने की जगह सीधा यमलोक पहुंचे।...

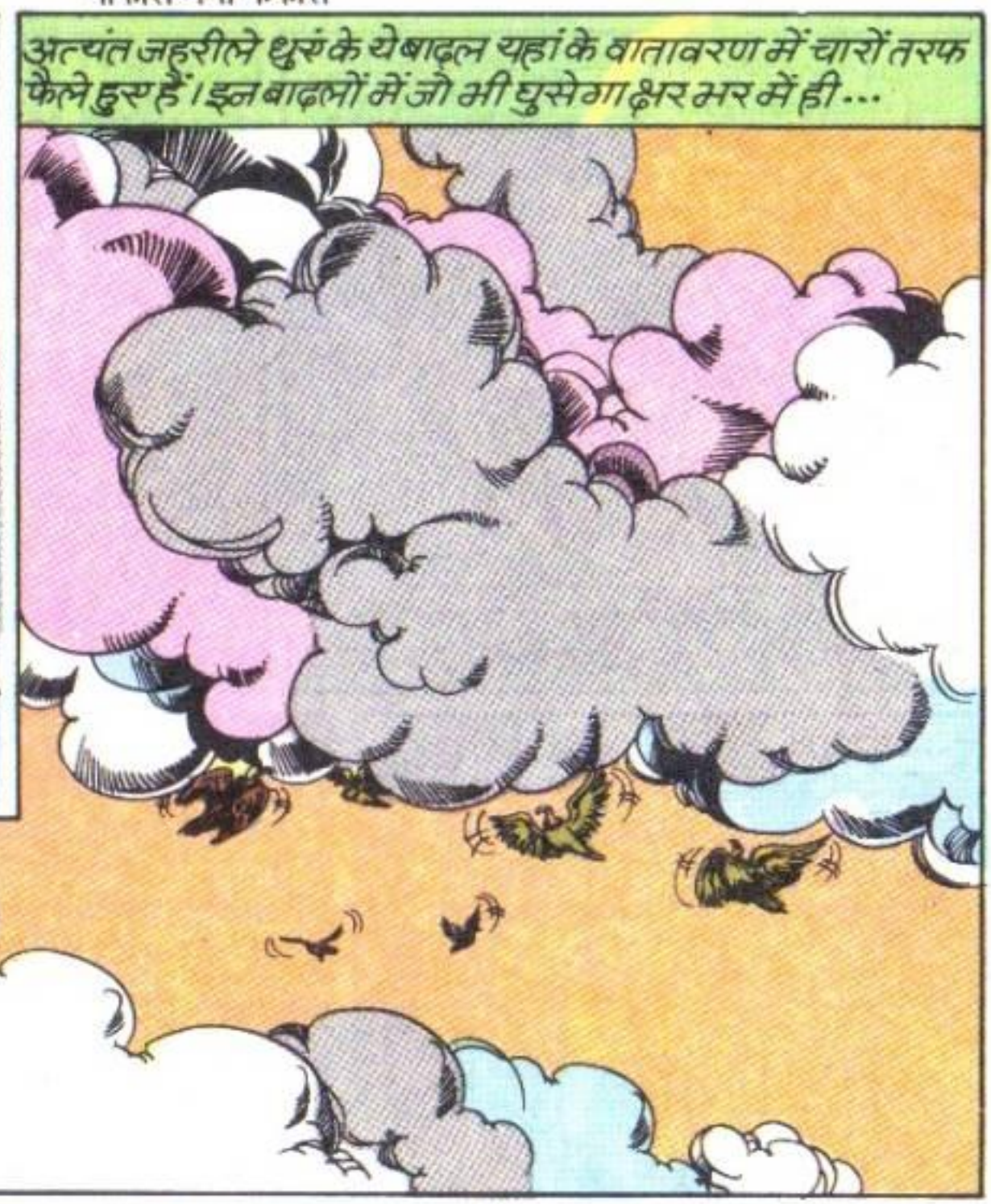
अत्यंत जहरीले धुएं के ये बादल यहां के वातावरण में चारों तरफ फैले हुए हैं। इन बादलों में जो भी घुसेगा क्षण भर में ही...

...पानी पानी हो जायेगा-
ओह!

भोकाल ने तुरन्त ही अपनी गति पर लगाम लगाई-
ओफ्फ! सही समय पर मेरी निगाह उन गिद्धों पर पड़ गई जो उस धुएं के बादल में प्रवेश करके पिघल गये वरना उन बादलों में घुसकर मेरा भी हाल उन्हीं जैसा होता!...
...इसका सीधा सा अर्थ है कि वे जहरीले धुएं के बादल हैं...

मोकाल ने तुरन्त ही खुद को प्रहारा की सहायता से एक आवरण में कैद किया...

...बचा सकता हूं!
...अपने शरीर को पिघलने से बचा सकता हूं मैं और उसके लिए मेरे पास बहुत ही कम समय है, क्योंकि अपने उपाय को कार्यान्वित करने के लिए मुझे प्रहारा के आवरण को अपने शरीर से हटाना होगा और मेरे ऐसा करते ही यह जहरीला बादल मुझ पर अपना प्रभाव डालने लग जायेगा इसलिए...
...मुझे अपने शरीर से प्रहारा का आवरण समाप्त करते ही...
बिना कोई क्षण गंवाए पंखों को बेहद तेज गति से हिलाकर इतनी तेज हवा उत्पन्न करनी होगी...
...जो इन धुओं के बादलों को उड़ाकर...
...यहां से दूर ले जाये!

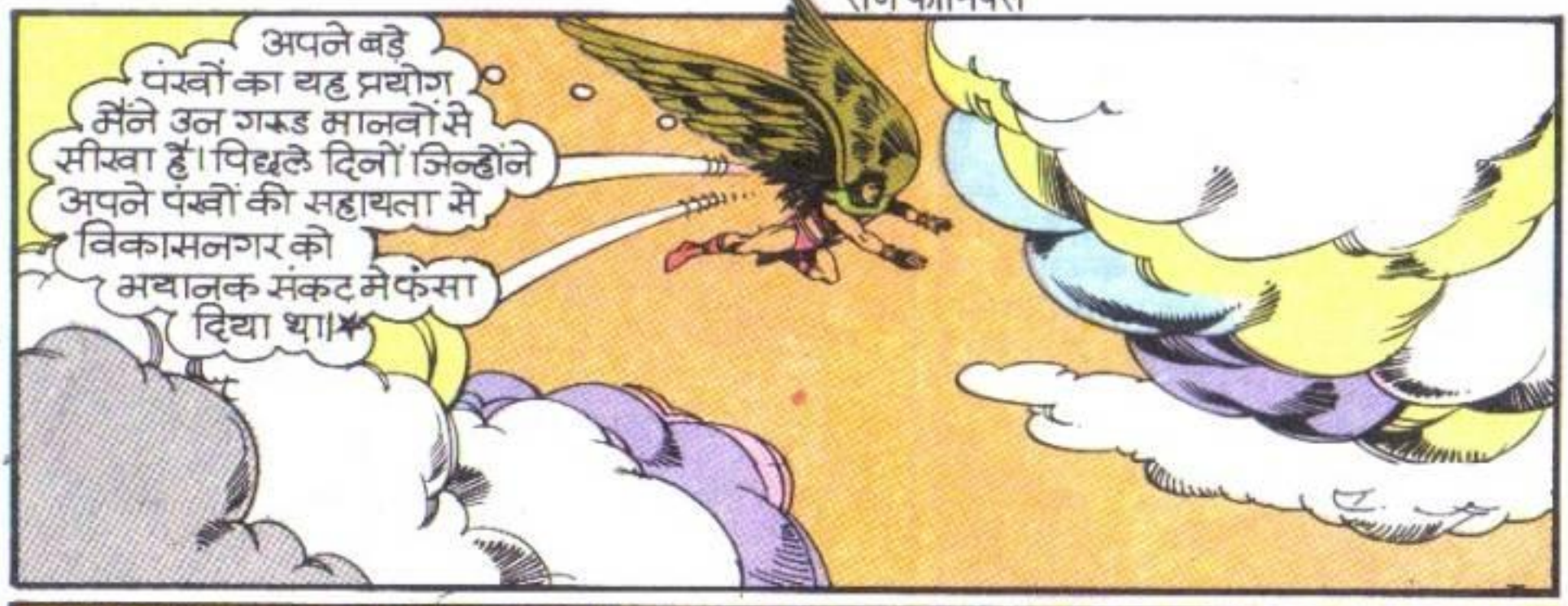

 ★ भोकाल और गरुड मानवों की टक्कर के बारे में जानने के लिए पढ़ें, पूर्व प्रकाशित कॉमिक **मोहरा** व **मात**

ओह! इस बार अपने शैतान सैनिकों के बल पर मेरा रास्ता रोक रहा है हड्डीराज !

परन्तु शायद उसे नहीं मालूम कि अब भोकाल एक ऐसा तूफान बन चुका है...

...जिसे शैतानियत का कोई भी पर्वत नहीं रोक सकता !
अंधाधुंध उन शैतान सैनिकों पर जरूर टूट पड़ा था भोकाल...

...लेकिन दिमाग अभी भी पूरी तरह उसके साथ था--
सभी शैतान सैनिक पहले ही मरे हुए हैं इसलिए इन्हें मारने का प्रयत्न करना अपनी शक्ति का व्यर्थ प्रयोग करना ही होगा इसलिए...

अच्छा यही है कि मैं इन्हें मारने की जगह प्रहारा के बंधनों से कैद करता जाऊं!

...वैसे प्रहारा के बंधनों में ये अधिक देर तक कैद तो नहीं रहेंगे परन्तु मुझे इतना समय अवश्य मिल जायेगा कि मैं इनसे छुटकारा पाकर...

...हड्डीराज तक जा पहुंचूं!
त्रिलोक विजयी बनने का अपना हर प्रयास बंद कर दुष्ट हड्डीराज क्योंकि...
...तुझे तेरे मृत्यु देवता के पास पहुंचना है!

मृत्यु हड्डीराज के पास आने से भय खाती है भोकाल इसलिए मुझे नहीं...
... तुझे अपने मृत्युदेव के पास पहुंचना है...
... मेरी इन काली किरणों का शिकार बनकर!
आज भोकाल पर तेरी कोई भी काली-पीली किरणें असर नहीं करने वालीं...
... भोकाल तेरे लहू से इस यज्ञ की अग्नि को बुझाकर अपनी हड्डियों को तेरे शिकंजे से मुक्त करके...
... तेरे हर सपने को चूर कर देगा।...
... जिसका आरम्भ होगा तेरे इस शक्ति यंत्र के टूटने से...
धड़ाक
ओह! तो तू मेरा शक्ति यंत्र तोड़कर मेरा सपना तोड़ना चाहता है।...

...चल मैं तुझे ऐसा करने का एक अवसर देता हूं।...

ये ले मैंने तेरी हड्डियों से बने इस हथियार को इस जल कुण्ड में डाल दिया...

जल्दी कर भोकाल तेरे पास कुछ ही क्षणों का समय है क्योंकि इस जलकुण्ड से तेरी हड्डियां कुछ क्षणों में ही ऐसे विलय होकर रह जायेगी कि तू इन्हें फिर कभी नहीं पा सकेगा।...

...जीवन भर बिना हड्डियों के घूमेगा! हा हा हा!
ओफ्फ! वह सही कह रहा है। सचमुच मेरे पास अपनी हड्डियों को दुबारा प्राप्त करने का यही अवसर है।...

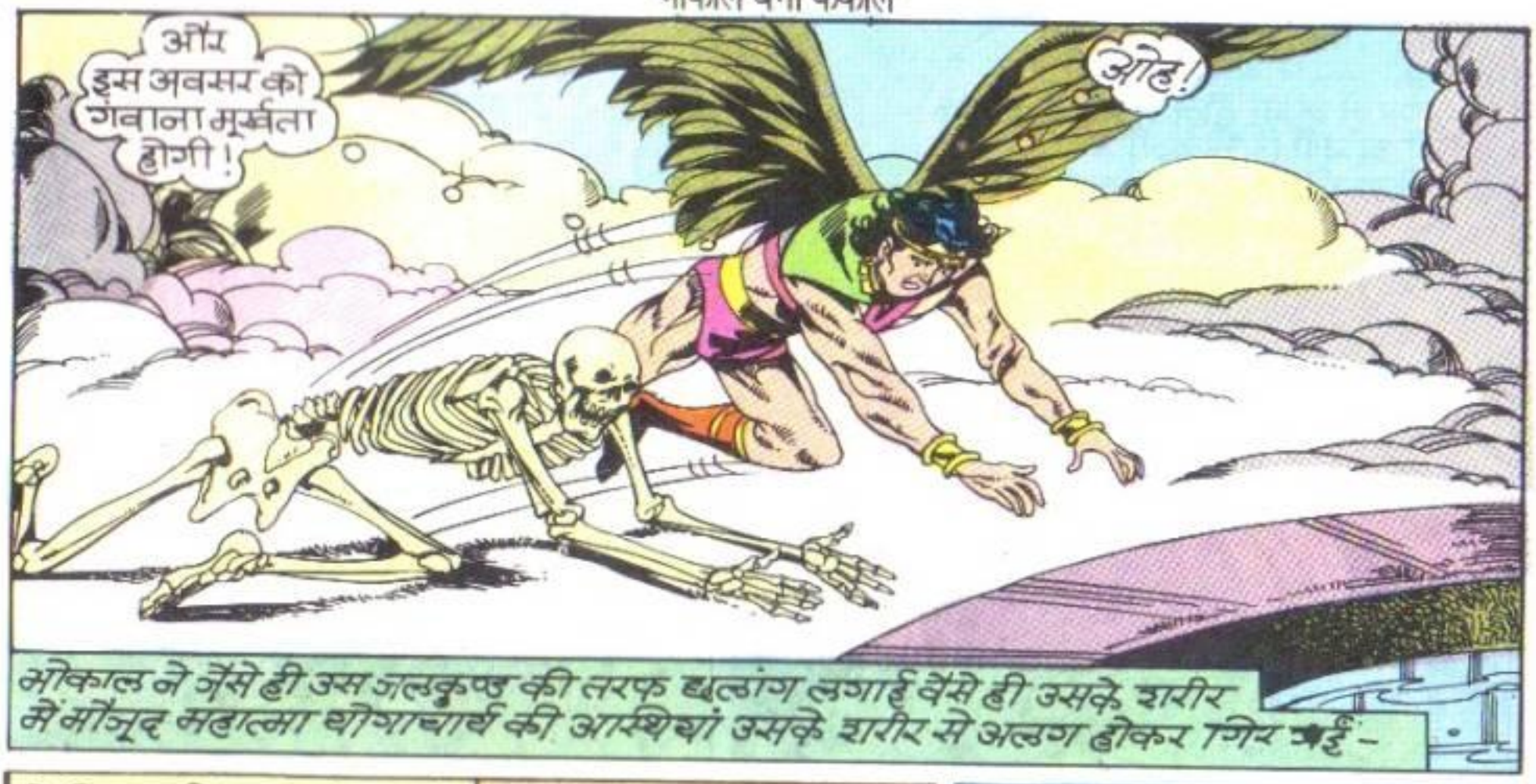
और इस अवसर को गंवाना मूर्खता होगी !
ओह!
भोकाल ने जैसे ही उस जलकुण्ड की तरफ छलांग लगाई वैसे ही उसके शरीर में मौजूद महात्मा योगाचार्य की अस्थियां उसके शरीर से अलग होकर गिर गईं -

लेकिन भोकाल जो छलांग लगा चुका था वह सफल हो गई थी-
उसका शरीर सीधा जल कुण्ड में गिरा...

...तेजी से अपनी हड्डियों की तरफ बढ़ गया-

ठीक यही वह क्षण था जब ऊपर मौजूद हड्डीराज के हलक से उबल पड़ा वह शैतानी अट्ट हास -
हा हा हा ! अपनी हड्डियों को दुबारा प्राप्त करने के लालच में आखिर भोकाल मेरे जाल में फंस ही गया। उसे पता नहीं कि इस जलकुण्ड में कूदकर वह अपनी हड्डियां तो प्राप्त कर लेगा लेकिन...

...उस जीवन को प्राप्त नहीं कर पायेगा जो उसी जल-कुण्ड में भस्म होने वाला है क्योंकि मेरी आंखों से निकली ये चिन्गारियां इस जलकुण्ड को बना देंगी...

...भयानक आग्नि कुण्ड। हा हा हा !
इधर जलकुण्ड भीषण आग्नि के कुण्ड में बदला।

इधर महात्मा योगाचार्य के प्रताप से अपनी हड्डियों को धारण करता भोकाल चौंका-
ओह! यह क्या? इस जलकुण्ड के जल में आग लग गई है।...
...मुझे तुरन्त ही यहां से बाहर निकलना होगा!

...अन्यथा यहीं भस्म होकर रह जाऊंगा मैं। ओफ्फ!
ओफ्फ! ऊपर पहुंचने के लिए मुझे भीषण संघर्ष करना पड़ रहा है। निश्चय ही हड्डीराज ने इस आग्नि को...

अत्यधिक संघर्ष करके भोकाल उस आग्निकुण्ड से बाहर तो निकला...

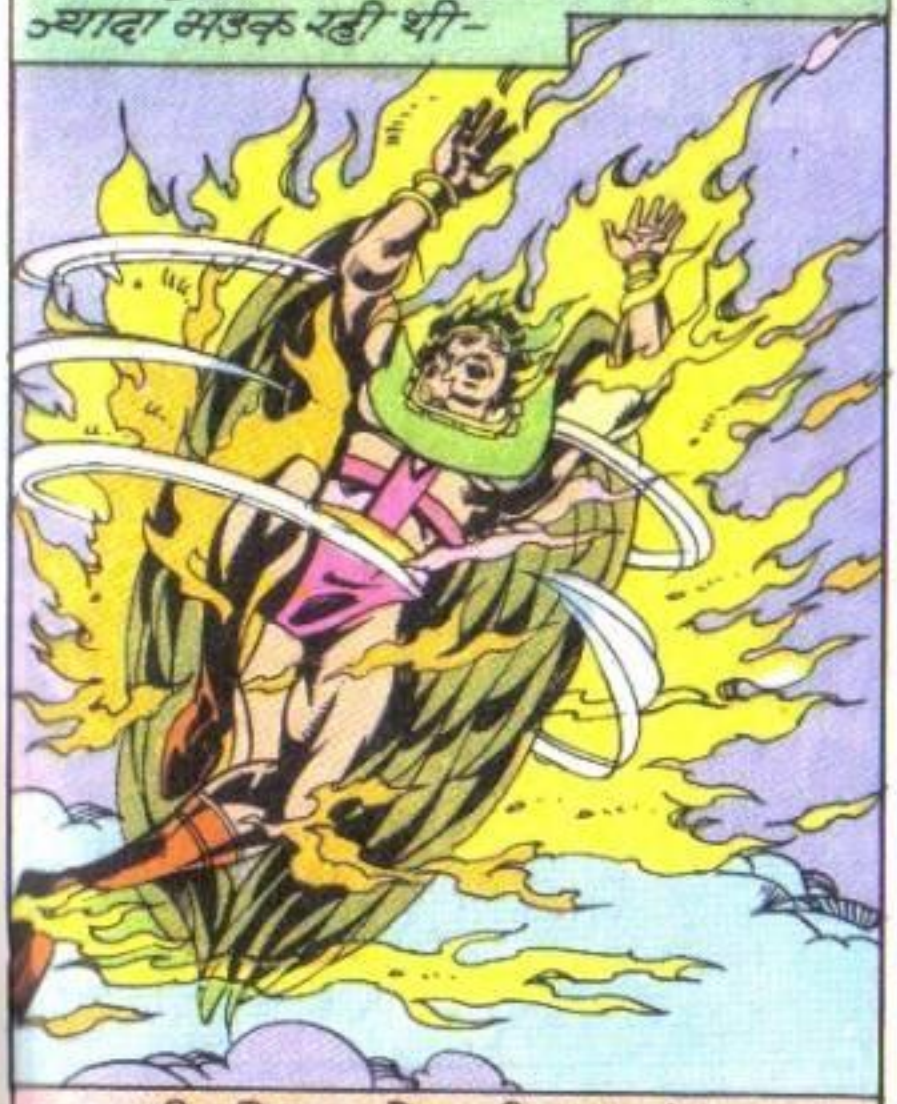

जल्द ही भोकाल के शरीर का मांस जलने की गंध वातावरण में घुलने लगी-

और भोकाल के कंठ से वे चीखें तब तक उबलती रहीं...

...जब तक आग्नि ने उसके शरीर को भस्म करके उसे कंकाल में नहीं बदल दिया--
आग्नि ने एक महाबली के जीवन का अंत कर दिया-
और जैसे ही ऐसा हुआ वैसे ही हड्डीराज के हलक से गूंजने वाले ठहाके ने सारा आकाश हिला दिया--
हा हा हा ! जो कंकाल मेरे सामने पड़ा है अब उसे मुझसे छीनने का प्रयत्न कोई नहीं कर सकता क्योंकि भोकाल नामक जिस महाबली का शरीर ऐसा कर सकता था वह राख बना पड़ा है। अब इन कंकाल रूपी हड्डियों का स्वामी मेरे सिवा और कोई नहीं इसलिए...
...अब इन हड्डियों के बने हथियार के बल पर ना कोई मुझे तीनों लोकों को जीतने से रोक सकता है...
...और ना त्रिलोक सम्राट होने से !
हा हा हा!
सफलता के नशे में चूर हड्डीराज नहीं जानता था कि वहां सिर्फ वही कंकाल नहीं पड़ा था जिसके बल पर वह त्रिलोक सम्राट बनने की सोच रहा था...

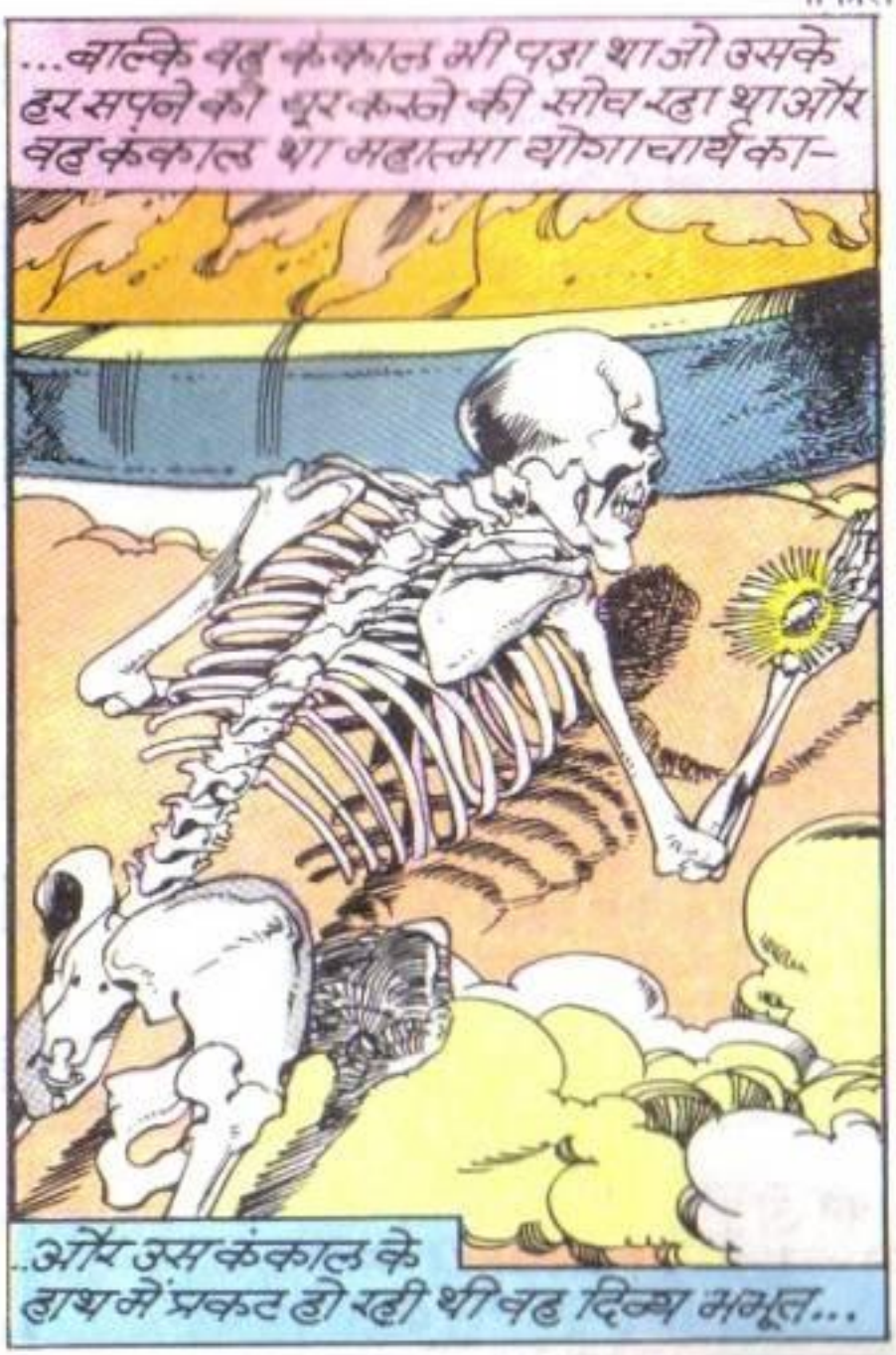
...बल्कि वह कंकाल भी पड़ा था जो उसके हर सपने को चूर करने की सोच रहा था और वह कंकाल था महात्मा योगाचार्य का–
...और उस कंकाल के हाथ में प्रकट हो रही थी वह दिव्य भभूत...

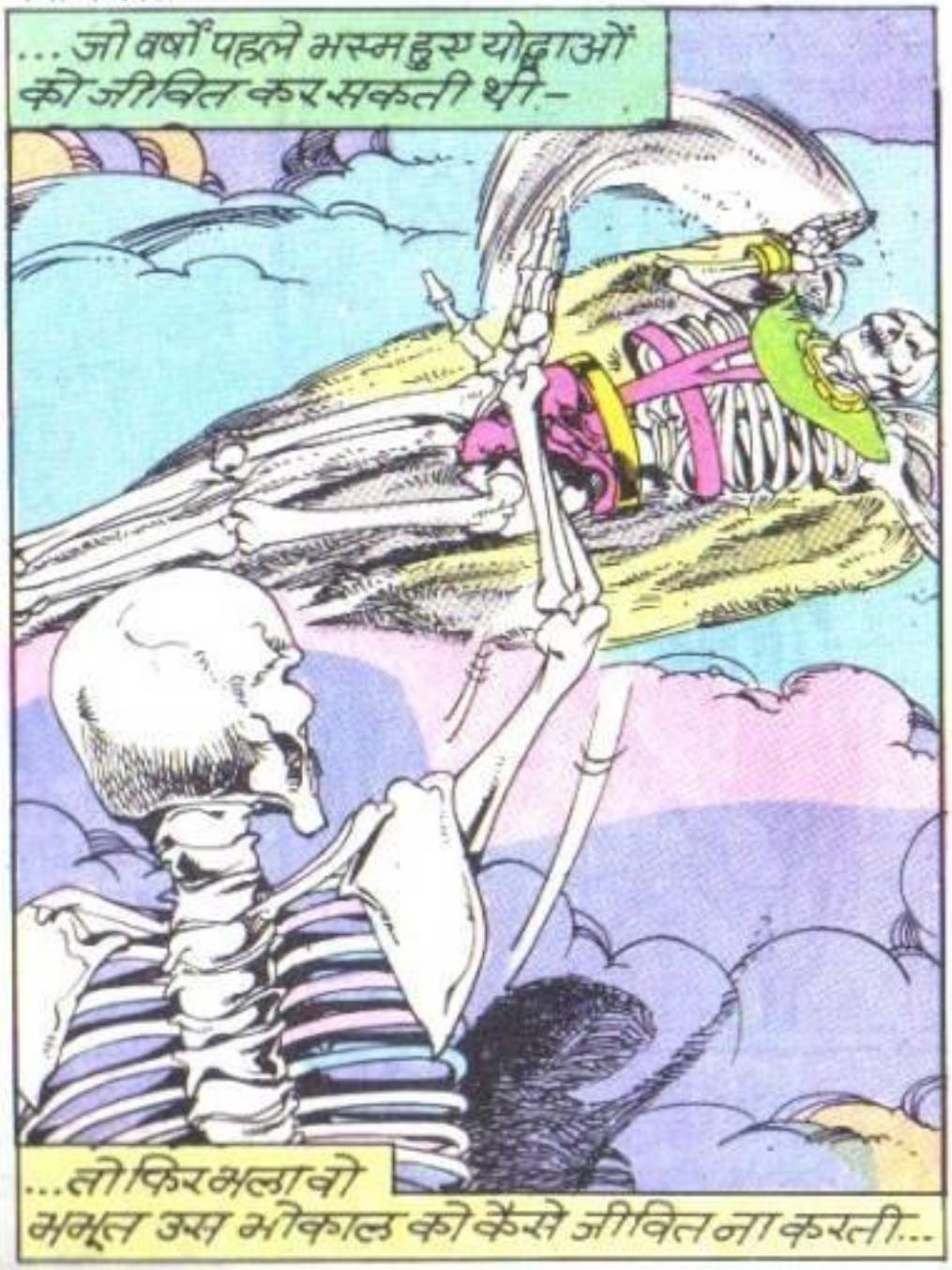
...जो वर्षों पहले भस्म हुए योद्धाओं को जीवित कर सकती थी–
...तो फिर भला वो भभूत उस भोकाल को कैसे जीवित ना करती...

... जो अभी कुछ क्षण पहले ही भस्म हुआ था–

नया जीवन पाकर एक झटके से उठ खड़ा हुआ वह महाबली...

यांSS

...और इसी के साथ हड्डीराज के हलक से उबलता ठहाका दर्दनाक चीखों में बदल गया –

आहह

भड़ाक

जो जीवन सदा पाप का अंत करने में समर्पित होते हैं ईश्वर उन्हें इतनी आसानी से स्वीकार नहीं करता! वह उन्हें किसी ना किसी बहाने वापस भेज देता है।...

...तुझ जैसे पापी का अंत कर देने के लिए।...

...और अब मुझे तुझे समाप्त करने में ज्यादा देर नहीं लगेगी।...

...क्योंकि तेरी शैतानी शक्तियों को तो मैं पहले ही समाप्त कर चुका हूं।

मेरी शक्तियों को मात करके तू यह मत समझ भोकाल कि तू मुझे समाप्त कर देगा!

हा हा हा! मुझे समाप्त करना असंभव है क्योंकि मेरे प्राण मेरे हृदय में हैं और मेरा हृदय मेरे शरीर में है ही नहीं...

...वह तो उस शैतान सेना के किसी एक सैनिक के सीने में धड़क रहा है जो तुझे टुकड़ों में बदलने तेरी तरफ बढ़ रही है!...
... मुझे छोड़कर...

...अपने प्राणों की चिन्ता कर!
...क्योंकि जैसे ही मुझे तेरा कंकाल मिलेगा वैसे ही मेरी सभी शक्तियां वापस आ जायेंगी!
ओफ्फ! एक बार फिर ये शैतान मुझे समाप्त करने पर उतारू हैं!...

...और इस बार इनकी संख्या इतनी अधिक है कि मैं प्रहारा से इन सबको नहीं रोक पाऊंगा!...

...मुझे इनसे बचने के लिए कुछ और सोचना होगा!
अतिशीघ्र क्योंकि...

...इनसे ज्यादा देर बचे रहना असंभव है।
...लेकिन इनसे बचने के लिए क्या किया जाये?
दिमाग के घोड़ों को पूरी गति से दौड़ाने के बाद...

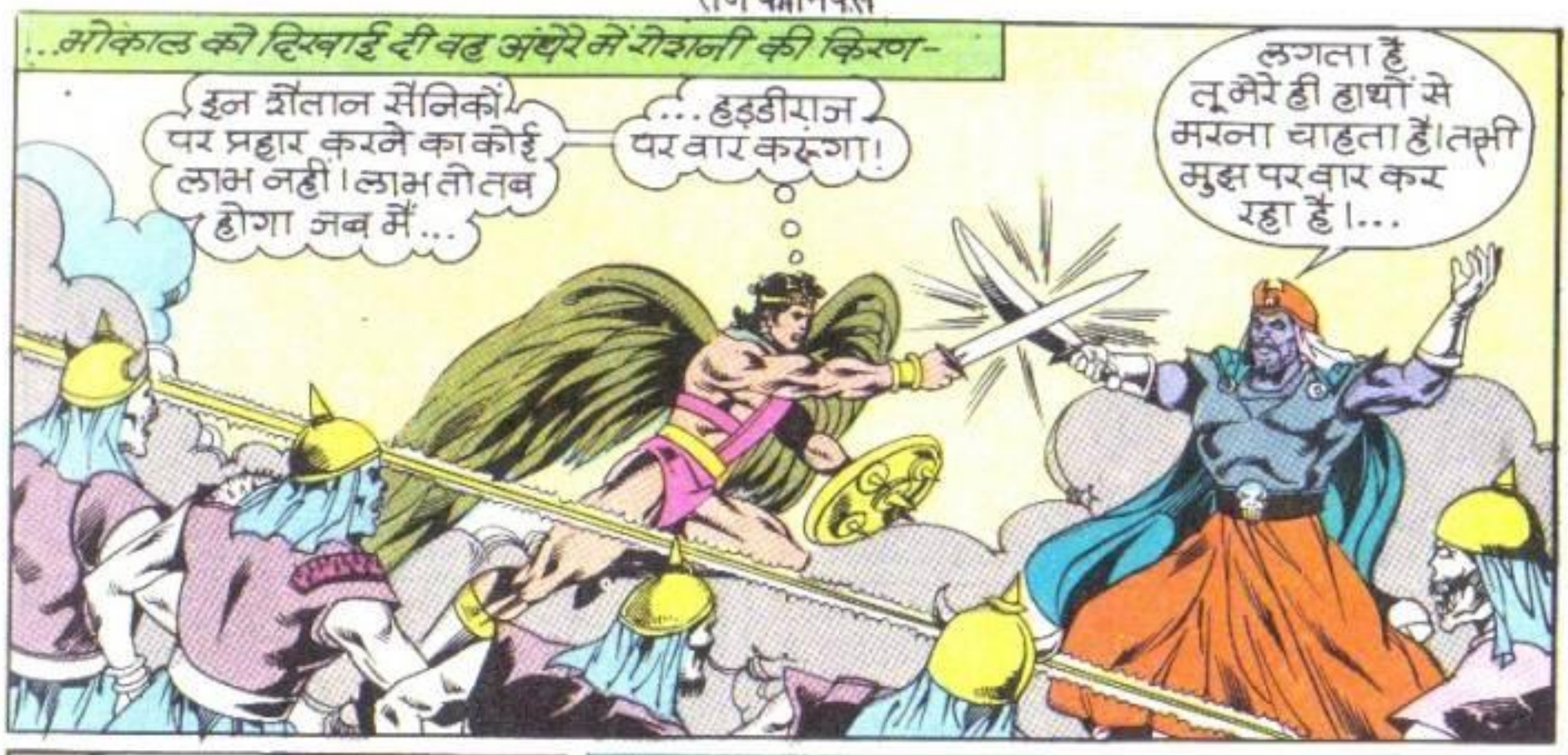
...भोकाल को दिखाई दी वह अंधेरे में रोशनी की किरण-
इन शैतान सैनिकों पर प्रहार करने का कोई लाभ नहीं। लाभ तो तब होगा जब मैं...
...हड्डीराज पर वार करूंगा।
लगता है तू मेरे ही हाथों से मरना चाहता है। तभी मुझ पर वार कर रहा है।...

...चल तेरी यह इच्छा मैं पूरी किये देता हूं!
वह भोकाल पर टूट पड़ा-

और इसी के साथ भोकाल के अधरों पर मुस्कान खेल गई-
बहुत खूब और तेज! और तेजी से प्रहार कर... यही तो चाहता हूं मैं क्योंकि...

...जितनी तेजी से तू वार करेगा उतनी ही तेजी से तेरी सांस फूलेगी और जितनी तेजी से तेरी सांस फूलेगी...

...उतनी ही तेजी से तेरा वह हृदय धड़केगा जो तेरे शरीर में नहीं...
...किसी शैतान सैनिक के शरीर में है!
बिल्ली की तरह तीखे कर लिये थे भोकाल ने अपने कान उस आवाज को सुनने के लिए...

...जिसकी उसे वहां गूंजने की आशा थी...
...और भोकाल की वह आशा उस समय पूरी हुई जब उसके कानों में गूंजी वह धक-धक की हल्की सी आवाज-
हृदय के धड़कने की यह आवाज शैतान सैनिकों की भीड़ में मौजूद उस सैनिक के सीने से आ रही है इसलिए...
...उसी सैनिक का सीना है मेरी तलवार का निशाना!
निशाना अचूक था--
भोकाल की तलवार ने उस सैनिक के सीने के साथ-साथ उसमें धड़कते हुड्डीराज के हृदय को भी चीर डाला-
इसी के साथ चीखता हुआ हुड्डीराज कटे हुए वृक्ष की भांति नीचे गिरा-
आह ह
कुछ देर तड़पा...
...और फिर शान्त हो गया...
...सदा के लिए-
समाप्त हो चुका था तीनों लोकों को जीत लेने का सपना देखने वाला शैतान...

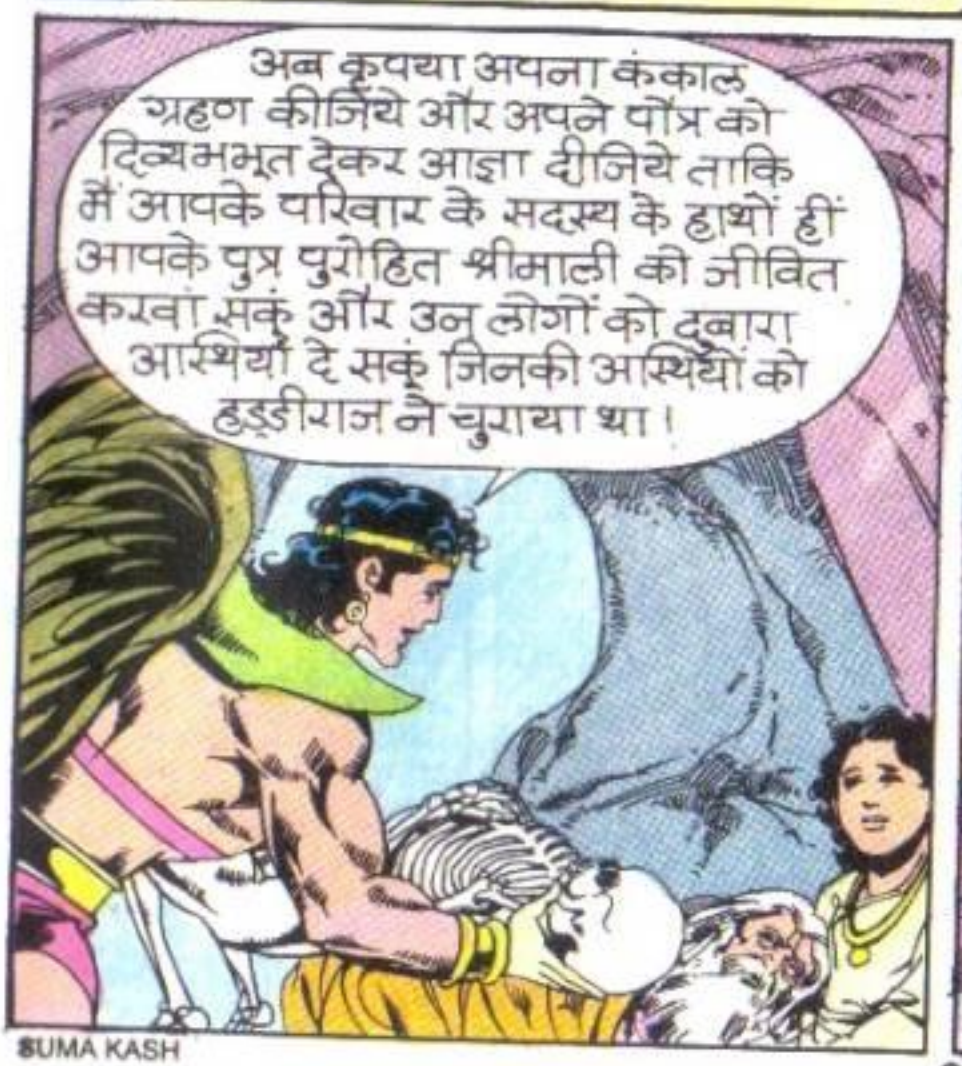

SUMA KASH

समाप्त